वीडियो समाचार देखने के लिए
Youtube पर
Subscribe करें हाथोर समाचार के सहयोगी Digital मीडिया संस्थान
Hindustan Path को
@hindustanpathnews

छपे हुए अखबार से और अधिक समाचार वेबसाइट पर प्रतिदिन पढ़ें :
www.hindustanpathnews.com

हिन्दी मासिक समाचार पत्र

हाथोर समाचार

RNI : CHHHIN/2021/82081

वर्ष-04 अंक-11 | सूरजपुर से प्रकाशित | बुधवार 06 नवम्बर से 05 दिसम्बर 2024 तक | पृष्ठ-8 मूल्य-10 रुपये | संपादक : बिंदू सिंह

छत्तीसगढ़ देश के लिए एक मिसाल, यहां विकास के नये कीर्तिमान बन रहे - उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़

राज्योत्सव की समापन बेला और राज्य अलंकरण समारोह को संबोधित करते हुए कहा

- अटल जी ने ऐसी सर्जरी की कि किसी को पीड़ा नहीं हुई और तीन नये राज्यों का निर्माण किया
- उपराष्ट्रपति ने कहा छत्तीसगढ़ के 36 सम्मान, इन्हें देखकर मुझे ऊर्जा मिली है
- हमारा उद्देश्य समग्र विकास, छत्तीसगढ़ में हो रहा बढ़िया काम- राज्यपाल रमेन डेका
- सबकी भागीदारी से विकसित छत्तीसगढ़ का संकल्प होगा पूरा- मुख्यमंत्री विष्णु देव साय

हथोर समाचार

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय राज्योत्सव के समापन तथा राज्य अलंकरण समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि विकसित भारत के निर्माण के लिए सबकी भागीदारी की जरूरत है। इसमें छत्तीसगढ़ का योगदान बढ़चढ़कर होगा। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ देश के लिए एक मिसाल, यहां मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में विकास के नये कीर्तिमान बन रहे हैं। इस मौके पर उन्होंने राज्य अलंकरण से सम्मानित सभी विभूतियों को बधाई देते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ के 36 सम्मान, जिन्हें देखकर मुझे ऊर्जा मिली है।

उपराष्ट्रपति ने आगे कहा कि जब शताब्दी ने पलटी खाई तो छत्तीसगढ़ का उदय हुआ, ये यात्रा यहां तक आ गई है। इसके लिए बहुत शुभकामनाएं देता हूँ, छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया, पुरानी कहावत है आज भी कानों में गूंजती है। आप सभी इस कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं। इस समारोह में आकर मेरा मन गौरव से भर गया है। छत्तीसगढ़ की पावन धरती समृद्ध सांस्कृतिक जीवन का दस्तावेज है। राष्ट्र के प्रति समर्पण और भारतीयता हमारी पहचान है। वर्ष 2000 में इस राज्य को विशिष्ट पहचान मिली। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को इस अवसर पर याद न करें तो बड़ी चूक होगी। उनकी याद सदैव आती है। राष्ट्रहित पर वे हमेशा अटल और मानवीय भावनाएं के विषय में बहुत कोमल थे। राजनीति में उन्होंने ऐसी सर्जरी की कि किसी को पीड़ा नहीं हुई और तीन राज्य बनाए, मैं उन्हें नमन करता हूँ। आपने पड़ोसी राज्य के मुख्यमंत्री को बुलाकर एक बड़ा मापदंड हासिल किया, इसके लिए मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय बधाई के पात्र हैं। अटल जी ने जो कारीगरी की, उसमें कोई दर्द नहीं था। भाई चारा था। अगले साल छत्तीसगढ़ अपने स्वर्ण युग में प्रवेश करेगा इसका सुखद समन्वय भारत के अमृत काल के साथ हो रहा है। हमें अपनी गौरवमयी विरासत को नहीं भूलना चाहिए। यह मौका है हमारे महापुरुषों को याद करने का। आज जब हम अमृतकाल मना रहे हैं। मुझे और आपको गर्व है कि जिन लोगों ने अपना बलिदान किया, उन्हें दूर दूर जाकर हम उन्हें नमन कर रहे हैं। उनके समक्ष नतमस्तक हो रहे हैं। भगवान बिरसा मुंडा, शहीद वीरनारायण सिंह जैसे लोगों ने विषम हालात में स्वतंत्रता की ज्योति को जलाये रखा, हम उन्हें हमेशा स्मरण करते हैं और इसके लिए जनजातीय दिवस मना रहे हैं। इन महापुरुषों ने नि:स्वार्थ भाव से समाज की सेवा की। इस मौके पर आपको मैं चिंतन और मंथन के लिए भी आग्रह करूंगा। सेवा नि:स्वार्थ होना चाहिए, इसमें कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिए। नि:स्वार्थ सेवा के नाम पर या आड़ पर हमारी श्रद्धा को परिवर्तन करने का प्रयास किया जा रहा है। हमारी संस्कृति हजारों साल पुरानी है उस पर प्रहार किया जा रहा है। इस पर हमें सजग होना चाहिए। यह धनबल के आधार पर हो रहा है। भोलेपन के आधार पर हो रहा है। भारत की आत्मा को जीवंत रखने के लिए ऐसी ताकतों को कुचलने की आवश्यकता है। आपसे आग्रह है कि इनसे सचेत रहिये। इन प्रयत्नों में खासतौर पर हमारे आदिवासियों भाइयों को निशाना बनाया जाता है। हमारे भारत की संस्कृति सबको समेटने वाली संस्कृति है। इस विशेषता को बरकरार रखना है। इस राज्य के युवाओं के लिए एक और चिंता का कारण है जिस पर यह सरकार काम कर रही है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और पूर्व मुख्यमंत्री डा. रमन सिंह ने नक्सलवाद से लड़ने का काम किया है। सरकार की सकारात्मक नीतियों की वजह से युवाओं को अनेक अवसर मिल रहे हैं। राज्य की गति और देश की प्रगति में बड़ा जुड़ाव है। राज्य की प्रगति और देश की प्रगति एक दूसरे की पूरक है। भारत की विकास यात्रा ने दुनिया को चमत्कृत कर दिया है। दुनिया हमारी तकनीकी प्रगति को देखकर दांतों तले उंगली दबा रही है। मेरे मन में शंका नहीं है कि छत्तीसगढ़ का देश की प्रगति में बड़ा योगदान रहेगा। छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक संपदा बेहद समृद्ध है। इस राज्य में अनेक संभावनाएं हैं। इस ओर ध्यान दिया जा रहा है। नतीजे भी अच्छे आ रहे हैं। यहां की खनिज संपदा जैसे बस्तर का लौह अयस्क, कोरबा का कोयला भारत के औद्योगिक विकास की प्राणवायु है। इस भूमि को धान का कटोरा कहा जाता है। यह राष्ट्र के विकास में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। एक बात मैं जरूर ध्यान दूंगा और आपसे भी आग्रह करूंगा कि राज्य का हित राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखना होगा, राज्य का हित राष्ट्र के हित से अलग नहीं है। प्रदेश के निरंतर विकास के लिए मैं मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय को बधाई देना चाहता हूँ।

संक्षिप्त समाचार

भटगांव में जुआ खेल रहे 5 जुआरियों पर पुलिस की कार्रवाई

रायपुर। धमतरी पुलिस ने थाना रूद्री के अंतर्गत भटगांव में जुआ खेल रहे पांच जुआरियों के खिलाफवैधानिक कार्रवाई की है। पुलिस ने मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर ग्राम भटगांव के राम मंदिर के पास छापेमारी की, जहां जुआरी ताश खेलते हुए रंगे हाथ पकड़े गए। पुलिस ने मौके पर जुआ खेल रहे जुआरियों को घेराबंदी कर गिरफ्तार किया। उनके कब्जे से 5,310 की नगद राशि और 52 पत्तियों का एक बंडल जब्त किया गया। आरोपियों के खिलाफजुआ अधिनियम की धारा 3(2) के तहत मामला दर्ज किया गया है। पकड़े गए जुआरियों में प्रेम लाल देवांगन 52 वर्ष, टोकेश्वर साहू 27 वर्ष, होमशंकर देवांगन 48 वर्ष, राजेश साहू 36 वर्ष व विष्णु ध्रुव 44 वर्ष को गिरफ्तार किया है। धमतरी पुलिस द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान का उद्देश्य जुआ खेलने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करना और समाज में इस अवैध गतिविधि को रोकना है। पुलिस ने सभी आरोपियों को चौकी में ले जाकर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

दोस्त ने प्राइवेट पार्ट पर चाकू से किया हमला

रायपुर। दुर्ग से इस वक्त एक बड़ी खबर सामने आ रही है जहां एक दोस्त ने अपने ही दोस्त के ऊपर प्राइवेट पार्ट पर चाकू से हमला कर दिया जिसके बाद घायल को सुपेला अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उसका इलाज जारी है। आपको बता दे घायल सनी यादव नाम का युवक अपने ही कुछ दोस्तों के साथ बैठकर शराब पी रहा था और शराब पीते पीते सन्नी की अपने एक दोस्त के साथ किसी बात को लेकर बहस होने लगी बहस इतनी ज्यादा बढ़ गई की बात हाथापाई और गाली गलौज तक पहुंच गई। जिसके बाद आरोपी युवक ने अपनी जेब से चाकू निकाला और उसके प्राइवेट पार्ट पर चाकू से वार कर दिया। इसके बाद सननी यादव खून से लतपत हो गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। इतने में ही उसके बाकी दोस्तो ने उसकी आवाज सुनी और तत्काल डायल 112 को कॉल किया गया। जिसके बाद डायल 112 मौके पर पहुंची और उसे सुपेला के सरकारी अस्पताल ले जाएगा, जहां उसका इलाज किया जा रहा है। आपको बता दे कि पूरी घटना जामुल थाना क्षेत्र को है आरोपी चाकू मारने के बाद वहां से फरार हो गया फिलहाल सनी यादव से पूछताछ करते हुए आरोपी की पता शाजी की जा रही है।

चाकूबाजी से एक की मौत, दूसरा घायल

रायपुर। लाल बगीचा के गौरा-गौरी विसर्जन में नाचने के दौरान हुए चाकूबाजी में एक युवक की मौत हो गई। वहीं एक युवक घायल है। मामले में पुलिस ने दो नाबालिग सहित 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी नवीन नाग 26 वर्ष निवासी सुभाष नगर खम्मन बाड़ी धमतरी ने रिपोर्ट दर्ज कराया कि घटना दिनांक के रात 10 बजे अपने साथियों युवराज नाग, महेश देवांगन, गुलशन नाग, विशाल नाग, नीरज नाग, संतोष नाग, रितेश देवांगन के साथ लाल बगीचा के गौरी-गौरा विर्सजन करने मुहल्ले वालों के साथ मकई चौक नाचते गाते जा रहे थे। तभी आरती मेडिकल स्टोर्स पुराना बस स्टैण्ड तक आये और वहां से सभी लोग पैदल-पैदल अपने-अपने घर जाने कलक्ता फेटो स्टुडियो पुराना बस स्टैण्ड के पास पहुंचे थे। उसी समय बाबर उर्फ लल्ला उर्फ जाबर खान, रमजान उर्फ रमजू ।

राज्य स्थापना दिवस पर लगाई गई एक दिवसीय प्रदर्शनी

मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने प्रदर्शनी स्टॉल का किया अवलोकन

■ आदिवासी सांस्कृति, आर्थिक सशक्तिकरण की झलकियों के साथ कबाड़ से जुगाड़ का उत्कृष्ट प्रदर्शन

रायपुर/ संवाददाता

कन्या हाई स्कूल मैदान बलरामपुर में आयोजित जिला स्तरीय राज्योत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महिला बाल विकास विभाग तथा समाज कल्याण मंत्री तथा बलरामपुर-रामानुजगंज जिले की प्रभारी मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े शामिल हुई। इस दौरान उन्होंने विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉल का अवलोकन किया तथा हितग्राही मूलक योजना से संबंधित सामग्रियों का वितरण भी किया। इस अवसर पर सामरी विधायक श्रीमती उद्देश्वरी पैंकरा, पिछड़ा आयोग सदस्य श्री कृष्णा गुप्ता, जनपद अध्यक्ष श्री विनय पैंकरा, जनपद उपाध्यक्ष श्री भानुप्रकाश दीक्षित, कलेक्टर श्री रिमिजियुस एक्का, पुलिस अधीक्षक श्री बैंकर वैभव रामनलाल सहित जनप्रतिनिधिगण तथा गणमान्य नागरिक मौजूद थे। गौरतलब है कि राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालय बलरामपुर में विभिन्न विभागों द्वारा हितग्राहीमूलक योजनाओं की एक दिवसीय प्रदर्शनी लगाई गई है। जिसमें 13 विभागों ने अपनी विभागीय योजनाओं का प्रदर्शन किया। आदिवासी विकास विभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में एकलव्य मॉडल, वन उपज संग्रहण, और पारंपरिक स्थानीय वाद्य यंत्रों, आभूषण का प्रदर्शन किया गया। आदिवासी समुदायों के पारंपरिक वाद्य यंत्रों का प्रदर्शन किया गया है, जो उनकी सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण

हिस्सा है। महिला बाल विकास विभाग के स्टॉल में महतारी वंदन योजना की जानकारी प्रदर्शित की गई है। यह छत्तीसगढ़ सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना है, जिसका उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करना है। इसके अलावा, प्रदर्शनी में पोषण आहार और सब्जी के बारे में भी जानकारी दी गई, जो महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। जिला पंचायत द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना का मॉडल प्रदर्शित किया गया। योजना का मुख्य उद्देश्य गरीब परिवारों को आवास प्रदान करना है। इसके साथ ही राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में अग्रसर हो रही समूह के बारे में बताया गया। वन विभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में लोगों को वन संरक्षण और पर्यावरण जागरूकता के महत्व, वन अधिकार पट्टा, जड़ी बूटी के औषधि गुण के बारे में जानकारी दी गई है। उद्यान विभाग द्वारा फ्ल और सब्जी प्रदर्शन किया गया। इसके माध्यम से लोगों को फ्ल और सब्जी के महत्व के बारे में जानकारी के साथ स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। फ्ल और सब्जियों में विभिन्न प्रकार के विटामिन, खनिज और फाइटोकेमिकल्स पाए जाते हैं, जो शरीर को रोगों से बचाव के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करते हैं। इनके सेवन से हृदय रोग, उच्च रक्तचाप जैसे रोगों की रोकथाम होती है। इसके साथ ही पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए उत्पादन और खपत को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना है। पशुधन विकास विभाग द्वारा पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। जिनका मुख्य उद्देश्य पशु रोगों के नियंत्रण और निवारण के लिए आवश्यक सुविधाएं प्रदान करना है, ताकि वे अपने पशुओं का उचित तरीके से उपचार करवा सकें। पशुधन विकास विभाग द्वारा चलाई जा रही मोबाइल पशु चिकित्सा इकाई जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में पशु चिकित्सा सेवाओं को मजबूत करना है ताकि पशुओं को उचित तरीके से उपचार मिल सके। जिला कौशल विकास प्राधिकरण एवं जिला परियोजना लाइवलीहुड के तहत मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना एवं प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के बारे में जानकारी दी गई। स्वास्थ्य विभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में आयुष्मान कार्ड, सिकल सेल, एनीमिया और टीबी जैसे महत्वपूर्ण स्वास्थ्य विषयों पर जानकारी दी गई। आयुष्मान कार्ड योजना के तहत गरीब वर्ग के लोगों को 5 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा प्रदान किया जाता है, जिससे वे अपने स्वास्थ्य की देखभाल कर सकें ।

मौसम का मिजाज बदल रहा है जल्द बढ़ेगी ठंड...

रायपुर। संवाददाता

छत्तीसगढ़ में मौसम का मिजाज बदल रहा है, जिसके चलते अधिकतम और न्यूनतम तापमान में फिर से वृद्धि हो रही है। शनिवार की रात रायपुर में तापमान 20 डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंच गया था, जिससे हल्की ठंड का अहसास होने लगा था। वर्तमान में, दक्षिणी-पश्चिमी नम हवाओं का प्रभाव अधिक हो गया है, जबकि उत्तर-पूर्व से आने वाली हवाओं की गति में कमी आ गई है। इसके परिणामस्वरूप प्रदेश के कई जिलों में बादल छा गए हैं, जिससे उमस भरी गर्मी का अनुभव बढ़ गया है। मौसम विभाग के अनुसार, बुधवार से मौसम में बदलाव आ रहा है। आने वाले पांच दिनों में रात के तापमान में कमी आने की संभावना नहीं है। हालांकि, इसके बाद न्यूनतम तापमान में चार डिग्री सेल्सियस तक गिरावट आ सकती है, जिससे ठंड बढ़ेगी। फ्लिहाल, प्रदेश में हवाओं की दिशा दक्षिण-पश्चिम होने के कारण ठंड का असर थोड़ा कम है। सोमवार को रायपुर सहित प्रदेश के अन्य हिस्सों में मौसम शुष्क रहने की संभावना जताई जा रही है। अधिकतर क्षेत्रों में अधिकतम और न्यूनतम तापमान में तीन से पांच डिग्री सेल्सियस की वृद्धि दर्ज की गई है। शहरी और बाहरी क्षेत्रों में ठंड का असर कम होता जा रहा है। रविवार को रायपुर का अधिकतम तापमान 34.1 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 23.1 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो सामान्य से चार डिग्री अधिक है।

छत्तीसगढ़ में भी हर अपराध के पीछे कांग्रेस का ही खूनी पंजा

रायपुर/ संवाददाता

भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं दुर्ग संभाग प्रभारी भूपेंद्र सवन्नी ने प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि आज जब हम प्रदेश का पचीसवां राज्योत्सव मना रहे हैं, वहां बड़े ही दु:ख और चिंता के साथ कांग्रेस की कारगुजारियों को आपके बीच रखने की विवशता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जहां भी अपराध और तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न हो रही है, उसकी जड़ में कांग्रेस है। हमारा यह स्पष्ट आरोप है कि कांग्रेस जान बूझ कर छत्तीसगढ़ को आग में झोंकना चाहती है। इसलिए पहले खुद अपराध को अंजाम देती है। षड्यंत्र रचती है। फिर उस पर सरकार की घेरने में उसके बड़े नेता लग जाते

हैं। यह कांग्रेस की राष्ट्रीय स्तर पर तय हुई साज़िश के तहत हो रहा है कि समूचे देश-प्रदेश को अराजकता में धकेल दो, फिर चुनी हुई सरकारों को अस्थिर करो। भय और आतंक का वातावरण निर्माण करो। श्री सवन्नी ने कहा कि छत्तीसगढ़ में भी हर आतंक और अपराध के पीछे कांग्रेस का ही खूनी पंजा है। कांग्रेस लोकसभा चुनाव में मिली करारी हार और छत्तीसगढ़ समेत तमाम राज्यों में हुए सफ़ाये से अब जनता में प्रति बदले की भावना से भरी हुई है। वह समाज में अशांति फैलाने का काम कर रही है। भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष एवं दुर्ग संभाग प्रभारी भूपेंद्र सवन्नी ने कहा कि अभी दामाखेड़ा में कबीरपंथ ही नहीं समूचे प्रदेश के आस्था के केंद्र में हमला करने वाला भी कांग्रेस का सक्रिय कार्यकर्ता निकला है। इसका प्रमाण स्वयं प्रकाशमुनि साहब के फेसबुक के पोस्ट में है। प्रकाशमुनि साहेब ने अपने फेसबुक पोस्ट में इस बात का उल्लेख किया है कि इस घटना में भी अपराधी सरपंच पति कांग्रेस पार्टी का ही कार्यकर्ता है। प्रकाशमुनि साहब ने स्पष्ट यह आरोप लगाया है।

मांदर की थाप बजाते हुए कलाकारों के साथ थिरके मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

■ कहा इससे आम लोगों को मिलती है शासन की योजनाओं और उपलब्धियों की सही जानकारी

रायपुर/ संवाददाता

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने राज्योत्सव की द्वितीय संध्या को जनसंपर्क विभाग की छायाचित्र प्रदर्शनी का अवलोकन किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर वहां मौजूद कलाकारों के पास पहुंचे और मांदर बजाकर अपनी प्रसन्नता का इजहार किया। मुख्यमंत्री श्री साय कलाकारों के साथ मांदर की थाप पर थिरकते हुए आज अलग अंदाज में नजर आए। मुख्यमंत्री का छत्तीसगढ़ी कला-संस्कृति से जुड़ाव और उनके सहज-सरल व्यवहार को देखकर लोग उनके मुरीद हो गए और तालियां बजाकर अपनी खुशी का इजहार किया। मुख्यमंत्री को इस मौके पर रिखी क्षत्रीय ने अपनी ओर से मांदर भेंट किया। गौरतलब है कि जनसंपर्क विभाग की प्रदर्शनी में राज्य की विभिन्न योजनाओं, विकास कार्यों और जनहितकारी परियोजनाओं को प्रदर्शित किया गया है। मुख्यमंत्री ने प्रदर्शनी में दिखाई गई योजनाओं और उपलब्धियों की सराहना की और इसे जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने का महत्वपूर्ण माध्यम बताया। इस अवसर पर उन्होंने वहां एलईडी टीव्ही के माध्यम से प्रसारित हो रहे पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में दिए गए भाषण को हेडफोन लगाकर सुना। गौरतलब है 4 अक्टूबर, 1977, भारत के विदेश मंत्री के तौर पर स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी देश का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में अपना भाषण दिया था। उन्होंने अपने भाषण में परमाणु निरस्त्रीकरण, आतंकवाद जैसे कई गंभीर मुद्दे उठाए थे। हिंदी में बोलने की वजह से ही उनका यह भाषण अविस्मरणीय और ऐतिहासिक हो गया। उन्होंने कहा कि भारत सभी देशों से मैत्री चाहता है और भारत विश्व शांति के लिए हमेशा अग्रणी भूमिका निभाएगा।

इस चुनाव में दक्षिण में नया इतिहास रचेंगे-कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज.....

■ दक्षिण से आकाश शर्मा प्रचंड मतो से चुनाव जीतेंगे

रायपुर/ संवाददाता

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि अबकी बार हम दक्षिण में नया इतिहास रचेंगे। पूरे दक्षिण विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस के पक्ष में वातावरण बना हुआ है। जनता के आर्शिवाद से यहां से कांग्रेस के प्रत्याशी आकाश शर्मा चुनाव जीतेंगे। दक्षिण विधानसभा का चुनाव में साय सरकार के 11 माह के कुशासन के खिलाफ जनता मतदान करने को तत्पर है। 11 माह में राज्य की बिगड़ती कानून व्यवस्था भाजपा की

वायदाखिलाफी, सरकार का कुशासन बड़ा चुनावी मुद्दा होगा। केई सरकार 11 माह के अल्प समय में ही इतनी ज्यादा अलोकप्रिय साबित हो सकती है। इसका उदाहरण छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार है। जनता भाजपा सरकार से ऊब चुकी है, अत: जनमानस भाजपा के खिलाफ है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी आकाश शर्मा प्रचंड मतो से चुनाव जीतेंगे। कांग्रेस का प्रत्याशी युवा है, उनको व्यापक जनसमर्थन मिल रहा है। वे जुझारू है। इसके विपरीत भाजपा प्रत्याशी पर सांसद रहते हुये निष्क्रियता का तमगा लगा हुआ है। रायपुर की जनता ने सांसद के रूप में सुनील सोनी को अवसर दिया था लेकिन वे जन आकांक्षाओं पर खरा नहीं उतर पाये। कांग्रेस ने उनके मुकाबले सक्रिय युवा को मौका दिया है। विधायक के रूप में आकाश शर्मा रायपुर दक्षिण की जनता की बेहतर सेवा करेंगे। सरकार की असफ्लता से जनता में भाजपा के खिलाफ आक्रोश है। कांग्रेस के कार्यकर्ताओं में दक्षिण उपचुनाव को लेकर उत्साह है।

शादी का झांसा देकर दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

रायपुर। एक युवती को शादी का प्रलोभन देकर उसके साथ लगातार दुष्कर्म करने तथा शादी से इंकार करने के मामले में पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। मामला मानिकपुर चौकी क्षेत्र का है। मिली जानकारी के अनुसार मानिकपुर पुलिस चौकी में एक नवंबर को एक पीड़ित युवती ने लिखित आवेदन पत्र प्रस्तुत कर एफआईआर दर्ज कराया था कि कृष्णानगर हनुमान मंदिर के सामने चौकी मानिकपुर के रहने वाले शुभम निर्मलकर ने उसे प्रेमजाल में फंसाकर तथा शादी का प्रलोभन देकर दिनांक 03.05.2024 के पूर्व से लगातार उसके साथ दुष्कर्म करता रहा है। तथा जब युवक को पीड़िता ने विवाह करने के लिए कहा तो उसने शादी करने से मना कर दिया है। पीड़िता की रिपोर्ट पर पुलिस सहायता केन्द्र मानिकपुर थाना कोतवाली में आरोपी युवक के खिलाफ धारा 376 भादवि पंजीबद्ध कर विवेचना कार्यवाही में लिया गया है। मामले में पुलिस ने वरिष्ठ अधिकारीयो के प्राप्त निर्देश के विवेचना कार्यवाही कर आरोपी की पता तलाश हेतु क्षेत्र में मुखबीर को सक्रिय किया गया। मुखबीर से प्राप्त सूचना के अनुसार आरोपी को कृष्णानगर कोरबा से रेड कार्यवाही कर हिरासत में लिया गया तथा आरोपी के विरूद्ध धारा सदर का अपराध घटित करना सबूत पाये जाने से उक्त धारा सदर में विधिवत गिरफ्तार किया जाकर न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया है।

शिल्पग्राम के अवलोकन से लोग हुए अभिभूत

राज्योत्सव शिल्पग्राम में दिखी छत्तीसगढ़ की कला-संस्कृति की झलक

■ रेशम कीट, तितली कोकून सेल्फी पॉइंट में सेल्फी लेने की मची होड़

रायपुर/ संवाददाता

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के मौके पर राज्योत्सव-2024 का भव्य आयोजन किया गया है। इस दौरान कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न शासकीय विभागों की विकास प्रदर्शनी लगाई गई है। इस विकास प्रदर्शनी में शिल्पग्राम का स्वरूप भी दिखाया गया है। शिल्पग्राम में छत्तीसगढ़ की कला-संस्कृति की झलक देखने को मिल रही है। रोचकता और रचनात्मकता से भरपूर यह शिल्पग्राम प्रदर्शनी पहुंचने वाले लोगों को स्व-स्फूर्त अपनी ओर आकर्षित कर रही है। शिल्पग्राम में मौजूद कलाकारों और शिल्पकारों से लोग उनकी रचनात्मकता के संबंध में चर्चा कर रहे हैं और साथ ही उनकी प्रतिभा की भूरी-भूरी प्रशंसा एवं सराहना भी कर रहे हैं। राज्योत्सव के दौरान लगी प्रदर्शनी स्थल में बनाए गए शिल्पग्राम जनमानस को आकर्षित कर रहा है और उनकी जिज्ञासा का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है, जिसमें प्रदेश स्तर के बुनकर शिल्पी अपने-अपने बेहतरीन व आकर्षक उत्पादों का जीवंत प्रदर्शन कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर आकर्षक छूट के साथ विक्रय भी कर रहे हैं। शिल्पग्राम में कोसा, रेशमी साड़ी ड्रेस मटेरियल तथा काटन बेडशीट का बेहतरीन संकलन खादी के वस्त्र बेलमेटल, काष्ठ कला, माटी कला टेराकोटा के आकर्षक उपयोगी तथा सजावटी सामग्री का बिक्री कर बुनकरों शिल्पियां ने आयोजन का लाभ उठाया है। शिल्पकार प्रदेश सरकार व मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का इस आयोजन हेतु आभार व्यक्त कर रहे हैं, उनका कहना है कि इसके माध्यम से उन्हें अनेक उत्पादों के प्रचार-प्रसार व विक्रय का प्लेटफॉर्म मिला, जिससे इन्हें अच्छी आय हो रही है। इस बार शिल्पग्राम के मध्य में रेशम कीट, तितली कोकून की रंग-बिरंगी मनमोहक कृति स्थापित की गई है। जिसमें सेल्फी लेने लोगों में होड़ मची हुई है। राज्योत्सव के अवसर पर जनसंपर्क विभाग की प्रदर्शनी लोगों के लिए उत्सुकता और आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। यहाँ लोगों को छत्तीसगढ़ से जुड़े

रोचक तथ्यों के साथ शासन की योजनाओं की जानकारी देने के लिए क्विज ट्रिविया का आयोजन किया गया है। जिसमें स्क्रीन पर आये सवालों का जवाब पुर्ती से देना है। 20 सवालों का जवाब देने के लिए 90 सेकंड का समय दिया गया है। क्विज़ ट्रिविया में भाग लेने के लिए लोगों में भारी उत्साह नज़र आया। इस क्विज़ में ख़ासकर युवा वर्ग और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवा बहुत रुचि ले रहे हैं। उल्लेखनीय है की इस वेब गेम को जनसंपर्क संचालनालय की इन हाउस डिजिटल टीम द्वारा किया गया है। प्रतिभागियों को विभाग द्वारा तत्काल ई-सर्टिफिक्रेट भी दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री जी के कट आउट के साथ फोटो क्लिक करवाने उत्साहित जन समुदाय जनसंपर्क विभाग के स्टॉल में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का कट आउट लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है, जिसमें मुख्यमंत्री जी की जीवंत तस्वीर के साथ लोग बड़े उत्साह के साथ फोटो क्लिक करवा रहे हैं। 'कैसा हो मेरे सपनों का छत्तीसगढ़' मुख्यमंत्री जी तक पोस्ट कार्ड के माध्यम से पहुँचा रहे अपनी बात जनसंपर्क विभाग के स्टाल में मेरे सपनों का छत्तीसगढ़ विषय पर पोस्ट कार्ड भी रखे गये हैं। इन पोस्ट कार्ड के माध्यम से सीधी अपनी बात मुख्यमंत्री जी तक पहुँचाने के लिए प्रदेश की जानता उत्साहित है।

ज्योत्सव में जनसम्पर्क विभाग के स्टॉल में लोगों को मिली शासकीय योजनाओं की जानकारी

कोरबा शहर के घन्टाघर चौक स्थित डॉ भीमराव अंबेडकर ओपन आडिटोरियम परिसर में एक दिवसीय राज्योत्सव का आयोजन किया गया। यहाँ विभिन्न विभागों द्वारा शासन की कल्याणकारी योजनाओं पर आधारित प्रदर्शनी और योजनाओं की जानकारी दी जा रही है। इसी कड़ी में जनसंपर्क विभाग द्वारा स्टाल लगाकर शासन की योजनाओं के संबंध में जानकारी दी गई। जिले के विकास तथा विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन की जानकारी भी प्रदर्शित की गई।

संभागीय ट्रक मालिक संघ के अध्यक्ष रविन्द्र तिवारी के नेतृत्व में सामरी के ट्रक मालिकों ने किया मंत्री रामविचार नेताम मुलाकात

हिण्डालको कंपनी पर लगाएं गंभीर आरोप

हाथोर समाचार

अंबिकापुर। सरगुजा संभागीय ट्रक मालिक संघ के अध्यक्ष रविंद्र तिवारी के नेतृत्व में सामरी के ट्रक मालिकों ने अपनी समस्याओ को लेकर मंत्री रामविचार नेताम से मिलकर अवगत कराये जिसमें ट्रक मालिकों ने कहा कि हिण्डाल्को कंपनी के द्वारा स्थानीय लोगों से जो वायदा किया है उसे पूरा नहीं कर रहा है और अपनी मांग को लेकर जब स्थानीय लोग आंदोलन करते हैं तो ठेका कंपनी के माध्यम से दबाव बना कर उनकी मांग को दबा दिया जाता है ! ट्रक मालिकों ने मंत्री जी से कहा है कि हमारी ट्रकें कतारबद्ध होकर लोड हो तथा उनका भुगतान तत्काल किया जाये क्योंकि वर्तमान में महीनों इंतज़ार के बाद ट्रक का भाड़ा दिया जा रहा है ! ट्रक मालिकों ने अपने मांग में कहा है कि सामरी क्षेत्र में प्रयावरण संरक्षण के लिए कंपनी द्वारा वृक्षारोपण किया जाये , सामरी से लेकर राजपुर तक फोर लेन सड़क का निर्माण किया जाये तथा स्थानीय लोगों को नौकरी दिया जाये जिस पर मंत्री रामविचार नेताम जी ने बलरामपुर रामनुजगंज के कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक को तत्काल निर्देश दिये कि ट्रक मालिकों की समस्याओं को दूर करें साथ ही मंत्री जी ने लोगों को आश्वान दिये की मैं बहुत जल्द ही प्रवास में आ रहा हूँ और आकार स्थानीय सभी समस्याओं को दूर करेंगे ! आज ज्ञापन देते समय सरगुजा संभागीय ट्रक मालिक संघ के अध्यक्ष रविंद्र तिवारी , दिलीप माँझी , अनिल यादव , ज़ाहिद अंसारी , सुदीप यादव , बबलू यादव , प्रयाग , सोनू गुप्ता ,आनंद , दयाल , लक्ष्मण , बारीक अंसारी , अशोक के साथ साथ अनेक ट्रक मालिक उपस्थित रहे !

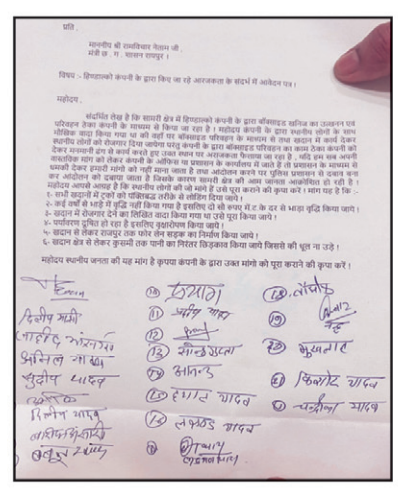

एसआई भर्ती, सूरजपुर के चयनित अभ्यर्थियों को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर ने दी शुभकामनाएं

हाथोर समाचार

सूरजपुर। हाल ही में एसआई परीक्षा परिणाम जारी किए गए है जिसमें सूरजपुर जिले के कई अभ्यथियों का चयन हुआ है जो सूरजपुर जिले के लिए बड़े ही गर्व की बात है। सोमवार, 04 नवम्बर 2024 को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर प्रशांत कुमार ठाकुर ने चयनित हुए सूरजपुर के अभ्यर्थी राहुल गौतम, ज्योति सिंह पुहुप, कमलेश्वर प्रजापति, अनूक साय एवं साईबर सेल में पदस्थ आरक्षक संतलाल यादव को एसआई में सलेक्ट होने पर शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना दी और उन्हें मार्गदर्शन भी दिया।

इस अवसर पर एसएसपी प्रशांत कुमार ठाकुर ने अभ्यर्थियों की मेहनत को सराहा और कहा कि आपके बुलंद हौसले और मुकाम हासिल करने के जज्बे से ही आपको सफ्लता मिली है। ट्रेनिंग के दौरान आने वाली समस्या एवं निदान के बारे में जानकारी साझा किया। उन्होंने कहा कि सब इंस्पेक्टर से भर्ती होकर आप वरिष्ठ पदों तक जा सकते हैं। अपने वरिष्ठ अधिकारियों के दिशा निर्देश में बेहतर कार्य दक्षता का प्रदर्शन करेंगे तो आपको पुलिस विभाग में अच्छा पहचान मिलेगा।

नव नियुक्त कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक से कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन की सौजन्य मुलाकात

हाथोर समाचार

सूरजपुर। कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन के जिला संयोजक डॉक्टर आर एस सिंह के नेतृत्व में फेडरेशन का प्रतिनिधित्व मंडल ने जिले में नवनियुक्त कलेक्टर एस. जयवर्धन व पुलिस अधीक्षक प्रशांत ठाकुर से सौजन्य मुलाकात कर जिले में उनका अभिनंदन किया गया। मुलाकात के दौरान कलेक्टर से परामर्शदात्री समिति की बैठक बुलाने आग्रह किया गया। जिस पर समिति की जल्द बैठक बुलाने का आश्वासन दिया गया। पुलिस अधीक्षक से हाल की घटनाओं पर चर्चा कर दोषियों पर कठोर से कठोर कार्यवाही किये जाने का आग्रह किया गया जिस पर पुलिस अधीक्षक ने पूर्ण आश्वस्त किया कि आप सभी के सहयोग से जिले में पूर्व की भांति शांति व्यवस्था बनाये रखने हेतु आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। मुलाकात के दौरान जिला संयोजक डॉक्टर आर. एस. सिंह, महा सचिव व जिलाध्यक्ष प्रदेश लिपिक वर्ग मो.इकबाल,महा सचिव तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ विजय पैकरा, ब्लाक अध्यक्ष छ. ग.प्रदेश संयुक्त संघ रामानुजनगर राधेश्याम साहू, जिलाध्यक्ष तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ मनीष दीपक साहू,प्रांतीय सचिव प्रदेश लिपिक वर्ग अभिनव दुबे, चम्पा साहा, माधुरी सोनी,मेरी निशा, फुल साय मराबी विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी भैयाथान,अजेंद्र नाथ दुबे बी आर सी भैयाथान,सतीश प्रताप सिंह ब्लॉक संयोजक भैयाथान, कुलदीप सिंह, अमर नाथ चौबे, रज्जाक अंसारी, सुग्रीव कुशवाहा, ईश्वर सिंह, बोधन राजवाड़े, पुष्पराज सिंह, सतपाल ठाकुर, छत्रपाल पैकरा सहित प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित रहे।

नवपदस्थ कलेक्टर एस. जयवर्धन ने नवाटोला चेकपोस्ट का किया सघन निरीक्षण

भैयाथान अनुविभागीय तथा तहसील कार्यालय में राजस्व संबंधित अभिलेखों की गहनता से की जांच

उप स्वास्थ्य केंद्र मोहली, बालक-बालिका छात्रावास बिहारपुर, पीएम स्कूल मोहली का किया निरीक्षण

सूरजपुर। नवपदस्थ कलेक्टर एस. जयवर्धन ने 30 अक्टूबर को जिले के नवाटोला चेकपोस्ट का सघन निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने धान खरीदी के पूर्व धान के सम्भावित अवैध बिक्री और परिवहन पर अभी से सतर्क रहने और तैयारी करने के निर्देश उपस्थित संबंधित अधिकारियों को दिये। इसके साथ ही कलेक्टर द्वारा भैयाथान अनुविभागीय कार्यालय तथा तहसील कार्यालय का निरीक्षण भी किया गया। जहां उन्होंने निरीक्षण के दौरान राजस्व संबंधित अभिलेखों की गहनता से जांच की और राजस्व प्रकरणों को समय सीमा में पूर्ण करने के दिशा निर्देश दिये।

दूरस्थ अंचल बिहारपुर क्षेत्र में उन्होंने उप स्वास्थ्य केंद्र मोहली, बालक-बालिका छात्रावास बिहारपुर, पीएम स्कूल मोहली का निरीक्षण किया। जहां उन्होंने उपस्वास्थ्य केंद्र मोहली में उपस्थित स्वास्थ्य कर्मियों से केंद्र में आने वाले मरीजो की संख्या, रजिस्टर में दर्ज आंकड़ो, दवा वितरण इत्यादि के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने स्टॉफ को नियमित समय पर उपस्थिति दर्ज कराने के तथा उप स्वास्थ्य केंद्र में दवाईयों के पर्याप्त स्टॉक रखने के निर्देश दिये।

इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ कमलेश नंदिनी साहू, एसडीएम सागर सिंह, ओड़गी जनदप पंचायत सीईओ डॉ. नृपेन्द्र व अन्य जिला तथा ब्लॉक स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

प्रेमनगर के अमेश्वरपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रारंभिक तीन दिवसीय शिक्षा वर्ग संपन्न , 38 शिक्षार्थी हुए शामिल

हाथोर समाचार

सूरजपुर। विश्व पटल भारत माँ का यशगान और वैभव पुन: स्थापित हो इसी ध्येय को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अनेक कार्यक्रम आयोजित करते रहता है। इसी क्रम में कार्य विस्तार के दृष्टि से प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ खण्ड प्रेमनगर जिला सूरजपुर छत्तीसगढ़ के मंडल उमेश्वरपुर में बीते 25 अक्टूबर से 28 अक्टूबर तक तीन दिवसीय प्रारंभिक शिक्षा वर्ग प्रांरभ हुआ। उक्त कार्यक्रम के प्रथम दिवस उद्घाटन सत्र में सूरजपुर जिला के जिला बौद्धिक शिक्षण प्रमुख सत्येंद्र कुमार गुप्ता जी के द्वारा संघ स्थापना की पृष्ठभूमि एवं राष्ट्र निर्माण में भूमिका विषय पर स्वयंसेवक बंधुओ के बीच विचार साझा करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

सत्र के दूसरे दिन चर्चा सत्र में भारतीय किसान संघ छत्तीसगढ़ प्रांत के संगठन मंत्री तुलाराम जी का मार्गदर्शन प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे स्वयंसेवक बंधुओं को प्राप्त हुआ, बौद्धिक सत्र में विभाग कार्यवाह अमरदीप देवांगन जी का उद्बोधन परम पवित्र भगवा ध्वज और प्रार्थना विषय पर प्राप्त हुआ। प्रारंभिक वर्ग में कुल 38 शिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण में जिला शारीरिक शिक्षण प्रमुख, इन्द्रजीत देवांगन, सह शारीरिक शिक्षण प्रमुख खिलेन्द्र वैष्णव जी, संघ कार्यालय प्रमुख आशीष साहू जी, खंड कार्यवाह विजय साहू जी एकल संच प्रमुख हरिहर राजवाड़े जी, कोरिया विभाग के किसान कार्य प्रमुख परमानंद राजवाड़े जी, वर्ग व्यवस्था प्रमुख सुभाष साहू जी (मंडल कार्यवाह उमेश्वरपुर) राहुल कुमार साहू जी के साथ साथ अन्य समाज के गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामय उपस्थिति में 28 अक्टूबर को वर्ग समापन किया गया।

पटवारी को घूस देने के लिए सरगुजा कलेक्टर से शख्स ने मांगा 8500 रुपया का उधार

हाथोर समाचार

अंबिकापुर। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में एक शख्स ने कलेक्टर से पटवारी को रिश्वत देने के लिए 8500 रूपये उधार मांगा है. पीड़ित व्यक्ति का कहना है कि पटवारी की ओर से रिश्वत की मांग करते हुए उसे पिछले काफी दिनों से परेशान किया जा रहा है।

दरअसल, सरगुजा कलेक्टर के जनदर्शन में आज एक व्यक्ति ने पटवारी को रिश्वत देने के लिए 8500 रुपए उधारी के लिए आवेदन दिया है. पीड़ित व्यक्ति का कहना है कि पटवारी के द्वारा रिश्वत की मांग करते हुए उसे पिछले काफी दिनों से परेशान किया जा रहा था. उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण उसके द्वारा कलेक्टर सरगुजा आवेदन किया गया है.

मजदूरी करके पैसा वापस कर दूंगा

पीड़ित का कहना है कि उसे अगर उधार पैसा मिलता है तो वह कलेक्टर को एक महीने के अंदर मजदूरी करके पैसा वापस कर देगा. वहीं ऐसा मामला सामने आने के बाद सरगुजा राजस्व विभाग की पोल खोल एक बार फिर खुल गई है.

दस हजार मांग रहा है पटवारी'

अंबिकापुर के मोमिनपुरा निवासी मुस्तकीम खान ने आज कलेक्टर जनदर्शन में एक आवेदन दिया, जिसमें उसने अपनी परेशानी का उल्लेख करते हुए कलेक्टर सरगुजा को बताया कि अम्बिकापुर पटवारी श्रवण के द्वारा जमीन का नक्शा काटने के एवज में दस हजार रुपए रिश्वत की मांग की जा रही है. उसने ढाई हजार रुपए तो दे दिया है, लेकिन उसके पास पैसे कम पड़ रहे हैं. ऐसे में उसने कलेक्टर से एक महीने के लिए 8500 रूपये उधार में मांगे हैं. पीड़ित का कहना है कि वह मैकेनिक का काम करता है और धीरे-धीरे कलेक्टर के द्वारा उधार में मिलने वाले पैसे को वह पटा देगा.

क्या बोले अधिकारी?

वहीं इस मामले अम्बिकापुर एसडीएम फौस सिंह का कहना है कि आज कलेक्टर जनदर्शन में पटवारी के द्वारा रिश्वत मांगने की शिकायत की गई है. मामला उनके संज्ञान में है. इस मामले की जांच के आदेश दे दिए गए हैं. जांच के पश्चात दोषी पर कार्रवाई की जाएगी

कलेक्टर और एसपी ने ली जिले में कानून व्यवस्था की बैठक

हाथोर समाचार

सूरजपुर। कलेक्टर एस. जयवर्धन एवं पुलिस अधीक्षक प्रशांत ठाकुर ने आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के संबंध में सभी एसडीएम, एसडीओपी, तहसीलदार, थाना प्रभारी व अन्य जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक ली। इस दौरान जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के संबंध में चर्चा की गई।

कलेक्टर जयवर्धन ने कहा कि जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी अधिकारी सजग होकर कार्य करें। उन्होंने असामाजिक तत्वों के द्वारा की जाने वाली वारदातों, घटनाओं एवं विवादों पर पैनी नजर रखने कहा। उन्होंने कहा कि किसी भी तरह की असामाजिक गतिविधि की जानकारी मिलने और अप्रिय स्थिति निर्मित होने की दशा में त्वरित रूप में कड़ी कार्यवाही करें। इस अवसर पर कलेक्टर जयवर्धन ने आपसी समन्वय एवं सहयोग को बेहद जरूरी बताया। उन्होंने जिले में कानून व्यवस्था सुनिश्चित करने एवं जिले में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिले के सभी एसडीएम एवं एसडीओपी तथा तहसीलदार एवं थाना प्रभारियों एवं संबंधित अधिकारियों को संयुक्त रूप से समन्वय स्थापित कार्य करने को कहा। इसके अलावा उन्होंने जिले में शांति व्यवस्था तथा सामाजिक सौहार्द्र कायम रखने के लिए सभी जरूरी उपाय करने एवं नियमों को कड़ाई से लागू करने के लिए कहा।

कलेक्टर जयवर्धन ने दिवाली, छठ त्योहारों को देखते हुए किसी भी अप्रिय घटना को रोकने एवम सुरक्षित वातावरण निर्मित करने के लिए निरंतर पेट्रोलिंग करने तथा त्यौहार के दौरान पटाखा विक्रेताओं के लिए तय नियमों का कड़ाई से पालन करवाने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने जनता के हित को देखते हुए सुरक्षित एवं शांत माहौल में त्यौहार मनाने के लिए सभी जरूरी सुविधाएं विकसित करने के निर्देश दिए। इसके अलावा उन्होंने जिले को नशामुक्त करवाने के लिए भी किए जा रहे प्रयासों की जानकारी लेते हुए आवश्यक निर्देश दिए। कलेक्टर जयवर्धन ने जिले में सड़क दुर्घटना के कारणों पर ध्यान रखते हुए यातायात, पीडब्ल्यूडी एवं आर टी ओ विभाग के अधिकारियों एवं अन्य सम्बन्धित अधिकारियों को उनको रोकने के लिए गंभीर प्रयास करने को कहा । साथ ही ऐसी घटना होने पर त्वरित कार्यवाही करते हुए पीड़ित को राहत प्रदान करने के लिए कहा।

इस अवसर पर एसपी प्रशांत ठाकुर ने जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन के अधिकारियों को जनता के हित में बेहतर रूप में आपसी समन्वय के साथ कार्य करने के लिए कहा। दिवाली एवं छठ पूजा के दौरान समस्त जिले में सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि जनता से जुड़े मामलों को बेहद संजीदगी से देखने और उनकी समस्याओं को बेहतर रूप में सुलझाने की दिशा में कार्य करें। इसके लिए उन्होंने कहा कि त्यौहार के दौरान कार्यक्रम के आयोजकों एवम संबंधितों के साथ बैठक करने एवं शासन एवं प्रशासन के नियमों का सख्ती से पालन करवाना सुनिश्चित करें।

एक लाख रूपये कीमत के गांजा सहित 1 गिरफ्तार, चौकी बसदेई पुलिस की कार्यवाही

हाथोर समाचार

सूरजपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर प्रशांत कुमार ठाकुर ने जिले के थाना-चौकी प्रभारियों को नशे के धंधे में लिप्त लोगों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही करते एवं क्षेत्र में सक्रिय मुखबीर का जाल फैलाने के निर्देश दिए थे जिसके बाद से ही जिले की पुलिस नशीली पदार्थ के गोरख धंधे सहित अवैध गतिविधियों पर सतत् निगाह बनाए हुए है। इसी तारतम्य में दिनांक 04.11.2024 को चौकी बसदेई पुलिस रेलवे स्टेशन सूरजपुर रोड़ उंचडीह में मुसाफिर चेक करने पहुंची जहां रेलवे स्टेशन सूरजपुर रोड में अम्बिकापुर से दुर्ग जाने वाले यात्री रेल के आने के समय पर जाकर स्टेशन में बैठे लोगों से यात्रा करने के बारे में जानकारी लेने के दौरान एक व्यक्ति ट्रेन जाने के बाद स्टेशन के सामने गाड़ी पार्किंग करने के स्थान के पास संदिग्ध अवस्था में एक बैग टांगे हुए खड़ा मिला। जिससे पूछताछ करने पर अपना नाम करमबीर कुमार पाटिल उर्फ छोटू पिता तुलसीदास पाटिल उम्र 24 वर्ष ग्राम कुसमुसी का रहने वाला हूँ और अम्बिकापुर से आ रहा हूँ, अपने दोस्त को बुलाया हूँ जिसका इंतजार कर रहा हूँ बताया। पूछताछ के उपरांत उसकी गतिविधि संदेहास्पद प्रतीत होने पर उसके बैग की तलाशी लिए जाने पर 5 किलो मादक पदार्थ गांजा पाया गया जिसकी कीमत 1 लाख रूपये है। मामले में गांजा जप्त कर आरोपी के विरूद्ध धारा 20बी एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्यवाही कर उसे गिरफ्तार किया है। इस कार्यवाही में एएसआई संजय सिंह, प्रधान आरक्षक आनंद सिंह, आरक्षक अमित सिंह, अभय तिवारी, देवदत्त दुबे, नीलेश जायसवाल व प्रदीप सोनवानी सक्रिय रहे।

रेड़ नदी छठ घाट का कलेक्टर व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर ने लिया जायजा

घाटों पर पुलिस अधिकारी व जवानों की रहेगी कड़ी चौकसी

हाथोर समाचार

सूरजपुर। लोक आस्था का पर्व छठ पूजा को लेकर कलेक्टर सूरजपुर एस. जयवर्धन व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर प्रशांत कुमार ठाकुर ने सोमवार, 04 नवम्बर को सूरजपुर स्थित रेड़ नदी छठ घाट का जायजा लिया जहां घाट की सफाई सहित समुचित व्यवस्था को दुरूस्त करने की कवायत तेजी से जारी है जिसे देखकर दोनों अधिकारी संतुष्ट दिखे। उन्होंने छठ घाट पर लाइटिग के साथ गोताखोर और मेडिकल टीम की तैनाती समेत कई आवश्यक दिशा निर्देश दिए। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ठाकुर ने बताया कि जिले में जिन-जिन स्थानों पर छठ पर्व मनाया जाता है वहां कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के प्रबंध किए है। छठ पूजा के दौरान पूरे जिले भर में विभिन्न घाटों पर भारी संख्या में अधिक पुलिस अधिकारी, पुलिस के जवान को तैनात किए जायेंगे। छठ घाट के अलावा शहर की भीड़ नियंत्रण एवं यातायात व्यवस्था को सुगम बनाए रखने के लिए पुलिस की 2 पेट्रोलिंग टीमें लगातार मुस्तैद रहेगी। जिले के कलेक्टर व एसएसपी ने सोमवार के शाम को सूरजपुर स्थित रेड़ नदी छठ घाट का निरीक्षण किया। उन्होंने रेड़ नदी मुख्य छठ घाट पर उमड़ने वाली भीड़, सुरक्षा एवं विधि-व्यवस्था को लेकर समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों से चर्चा की। इस दौरान उन्होंने छठ पूजा समिति द्वारा व्रतियों एवं श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए की जा रही तैयारी की भी जानकारी ली और कई जरूरी निर्देश भी दिए। यातायात प्रभारी को वाहनों की पार्किंग के उचित इंतेजाम करने के निर्देश दिए। समिति की ओर से यहां व्रतियों एवं श्रद्धालुओं के सुविधा के लिए की जा रही तैयारी पर संतोष जताया।

इस दौरान एसडीएम जगन्नाथ वर्मा, सीएसपी एस.एस.पैंकरा, थाना प्रभारी सूरजपुर विमलेश दुबे, निरीक्षक प्रकाश राठौर, नगर पालिका के अधिकारी, छठ पूजा समिति के संतोष सोनी, गणेश सोनी, राजेन्द्र गुप्ता, अनिल गुप्ता, श्रवण जैन सहित अन्य गणमान्य नागरिकगण मौजूद रहे।

संपादकीय

सबसे ज़्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई है सिंघम अगेन

कालीदास पांडेय

(प्रात: आवाज)। जियो स्टूडियोज रोहित शेट्टी पिक्चर्ज, रिलायंस एंटरटेनमेंट, सिनर्जी और देवगन फिल्म्स के सहयोग से निर्मित ड्रामा, इमोशन और एक्शन से भरपूर फिल्म सिंघम अगेन दिपावली के अवसर पर रिलीज किए जाने के बाद सिंगल स्क्रीन और नेशनल मल्टीप्लेक्स चेन में शानदार ऑक्यूपेंसी के साथ धमाल मचा रही है। सिंघम अगेन ने रिलीज के पहले दिन दुनिया भर में 65 करोड़ रुपये की कमाई की और भारत में 43.7 करोड़ रुपये की कमाई की, जिसे रोहित शेट्टी-अजय देवगन के सहयोग से बनी अब तक की सबसे बड़ी ओपनिंग के रूप में देखा जा रहा है। इस फिल्म ने टिकट काउंटर पर मजबूत एडवांस और लोगों की प्रशंसा के साथ देश भर में दर्शकों को रोमांचित किया है, जो आने वाले सप्ताहांत को शानदार बनाने का वादा करता है। स्त्री 2 के बाद यह साल की दूसरी सबसे बड़ी ओपनिंग है, जो जियो स्टूडियो की ही फिल्म थी। सिंघम अगेन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 2,000 से अधिक स्क्रीनों पर प्रदर्शित करने के साथ, निर्माताओं ने एक बेजोड़ वैश्विक पहुंच हासिल कर ली है। इसमें ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और फिजी में रिकॉर्ड 197 स्क्रीन, उत्तरी अमेरिका में 760 से अधिक स्क्रीन के साथ पहली फिल्म और यूके और आयरलैंड में 224 स्क्रीन के साथ व्यापक रिलीज शामिल है। कनाडा में, सिंघम अगेन को शीर्ष सिनेमा श्रृंखलाओं में दिखाया गया है, अकेले सिनेप्लेक्स का देश के बॉक्स ऑफिस पर 80 प्रतिशत हिस्सा है। यह फिल्म एक अविस्मरणीय सिनेमाई अनुभव सुनिश्चित करने के लिए प्रशंसक-पसंदीदा पात्रों को फिर से जोड़ता है। सलमान खान के विशेष कैमियो के साथ अजय देवगन, रणवीर सिंह, करीना कपूर, दीपिका पादुकोण, अक्षय कुमार, टाइगर श्रॉफ, अर्जुन कपूर और जैकी श्रॉफ अभिनीत, सिंघम अगेन ने देश और विदेश में जोरदार शुरुआत की है। आलोचक और फिल्म ट्रेड विश्लेषक अजय देवगन, ज्योति देशपांडे और रोहित शेट्टी द्वारा संयुक्तरूप से निर्मित सिंघम अगेन की सराहना कर रहे हैं, तरण आदर्श ने इसे बहुत बढ़िया और बहुत बड़ी फिल्म कहा है, जबकि कोमल नाहटा ने इसे सुपरहिट बताया है। टाइम्स ऑफ इंडिया जैसे राष्ट्रीय दैनिकों ने फिल्म को बेहद मनोरंजक और जोरदार एक्शन के रूप में सराहा है, और दैनिक भास्कर ने बाजीराव सिंघम के रूप में अजय देवगन, खासकर सिम्बा के रूप में रणवीर सिंह और सूर्यवंशी के रूप में अक्षय कुमार और चुलबुल पांडे के रूप में सलमान खान के बहुप्रतीक्षित प्रदर्शनों की सराहना की है, जो लगातार ताली बजाने और उच्च ऑक्टेन मनोरंजन प्रदान करते हैं।

प्रमुख मनोरंजन पोर्टलों ने भी प्रशंसा में अपना योगदान दिया, बॉलीवुड हंगामा ने सिंघम अगेन को आम जनता के लिए एक बड़ा दिवाली धमाका बताया, पिंकविला ने इसे मनोरंजन और आश्चर्य से भरपूर बताया, और ट्रेड विश्लेषक मिस मालिनी ने इसे रोष, परिवार और अविस्मरणीय वीरता का दिवाली तमाशा कहा।

प्रतियोगिता में मटके पर ठीक निशाना लगाने से विश्वरथ सबमें प्रिय हो गया। तब तक विश्वरथ को गुरुकुल में आये केवल तीन महीने ही हुआ था। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्ति के समय ही वह सम्पूर्ण आर्यावर्त में सबसे बड़ा महारथी हो चुका था। तभी उसके पिता भरतराज गाधिका देहांत हो गया। अगस्तउसे अधूरी शिक्षा में छोड़ नहीं सकते थे। विश्वरथ का मन राज्य-काज में नहीं लगता था। उस समय तक उन्हें मंत्र दर्शन होने लगे थे।

भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित ऋषि महर्षि विश्वामित्र

अशोक प्रवृद्ध

भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित ऋषि महर्षि विश्वामित्र ने न सिर्फ अपने ज्ञान और तपस्या के बल पर भारतीय धर्म और संस्कृति को समृद्ध किया, बल्कि अपनी साधनाव तपस्या के बल पर क्षत्रियत्व से ब्राह्मणत्व धारण कर सातवें मन्वन्तर के सप्तऋ षियों में शामिल होने में सफलता प्राप्त कर ली और अपनी कर्म से शुद्धि (आर्य बनाने) आंदोलन के प्रथम पुरुष के रूप में कृणवंतों विश्वमार्यम के उद्घोषक भी बने। राजर्षि से ब्रह्मर्षि बने विश्वामित्र ने अपने कर्म से यह सिद्ध कर दिखाया कि संध्योपासना व तपस्या के बल पर सब कुछ संभव किया जा सकता है तथा प्राणी को काम व क्रोध से अपनी शक्ति को बचाकर रखना चाहिए, अन्यथा जीवन का मार्ग और अधिक समय साध्य व कष्ट साध्य हो जाती है।गायत्री मंत्र के द्रष्टा(दृष्टा) महर्षि विश्वामित्र का वैदिक चिंतन में विशेष स्थान है। विश्वामित्र ही ऋग्वेद में दस मंडलों में से तृतीय मंडल के द्रष्टा हैं। इस कारण तृतीय मंडल को वैश्वामित्र मंडल कहा जाता है। तीसरे मंडल में इंद्र, अदिति, अग्नि, उषा, अश्विनी आदि देवताओं की स्तुतियों के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म और गौ महिमा का वर्णन है।ऋग्वेद के तीसरे मंडल के 62वें सूक्त में गायत्री मंत्र का वर्णन अंकित है-

भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात

अर्थात- उस प्राणस्वरूप, दुखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अपने अन्तःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें। गायत्री मंत्र को सभी वेद मंत्रों का मूल कहा जाता है।वैदिक और पौराणिक ग्रंथों में विश्वामित्र के संबंध में अंकित विस्तृत वर्णनों के समीचीन अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ऋ षि विश्वामित्र शुद्धि (आर्य बनाने) आंदोलन के प्रथम पुरुष थे। वे देवासुर संग्राम काल में आर्यभूमि नाम से संज्ञायित सप्त सिंधु प्रदेश अर्थात सिंधु, सरस्वती, दृषिद्वती, शतद्र, परुष्णी, असीकृ और वितस्ता तक फैले विशाल प्रदेश, जो तिब्बत से होकर बिन्ध्य तक फैला हुआ था, में भरत नाम की प्रतापी जाति में उत्पन्न महाराजा गाधि के पुत्र थे। उनके जन्म की कथा भी रोचक है। महाराज गाधि को बड़ी उम्र हो जाने के बाद भी उनके उतराधिकारी के रूप में कोई पुत्र उत्पन्न नहीं होने से वे चिंतित थे। यद्यपि उनकी एक पुत्री सत्यवती थी, जिसका विवाह ऋषि भृगु ऋचिक के साथ हो चुका था। सत्यवती ने अपने पति भृगु से अपने भाई के पैदा हो सकने अर्थात अपनी माता के पुत्रवती होने की कामना करते हुए इसके लिए वरुण देव से प्रार्थना करने के लिए कहा। सत्यवती के बारम्बार इस बात के लिए कहे जाने पर भृगु ऋचिक ने वरुण देव से प्रार्थना की। राजा गाधि को और ऋचिक ऋषि अर्थात सत्यवती को एक साथ पुत्र हुआ। राजागाधि के पुत्र का नाम विश्वरथ और सत्यवती के पुत्र का नाम जमदग्नि रखा गया। दोनों मामा-भांजे एक साथ रहने लगे। दोनों कभी अलग नहीं होना चाहते थे, जैसे दो शरीर एक प्राण हों।दोनों को साथ ही शिक्षा प्राप्ति हेतु ऋषि अगस्तके गुरुकुल भेजा गया। उस गुरुकुल में आर्यावर्त के बहुत से राजाओं के बच्चे भी पढ़ते थे, लेकिन ये दोनों बहुत मेधावी थे। इसलिए कम समय में ही अपने गुरु के सर्वाधिक प्रिय शिष्य हो गए।एक बार गुरुकुल में आयोजित प्रतियोगिता में घूमती हुई मटकी पर निशाना लगाने की गुरु अगस्त की आज्ञा पर विश्वरथ ने वरुण देवता को ध्यान कर बाण छोड़ा, जो ठीक निशाने पर जाकर लगा। वहाँ राजा दियोदासभी अगस्तके गुरुकुल में मुख्य अतिथि के नाते तथा उनका पुत्र सुदास भीगुरुकुल के पुराने छात्र के रूप में उपस्थित था। नए- पुराने सभी छात्र प्रतियोगिता में अपनी करतब दिखला रहे थे। प्रतियोगिता में मटके पर ठीक निशाना लगाने से विश्वरथ सबमें प्रिय हो गया।तब तक विश्वरथ को गुरुकुल में आये केवल तीन महीने ही हुआ था। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्ति के समय ही वह सम्पूर्ण आर्यावर्तमें सबसे बड़ा महारथी हो चुका था। तभी उसके पिता भरतराज गाधिका देहांत हो गया। अगस्तउसे अधूरी शिक्षा में छोड़ नहीं सकते थे। विश्वरथ का मन राज्य-काज में नहीं लगता था। उस समय तक उन्हें मंत्र दर्शन होने लगे थे।इसलिए उनकी इच्छा ऋषि बनने की थी। उनका मन आश्रम से निकलने को नहीं हो रहा था। उनकी यह जानने की इच्छा थी कि आखिर ऋषि अगस्त दस्यु राज को समाप्त करना क्यूँ चाहते हैं? वरुण देवता की कृपा असुरों पर क्यों नहीं? उस समय दो प्रकार के चिंतन की दिशा उभरती दिखाई दे रही थी। ऋषि वशिष्ठ रक्त शुद्धि (अनुवांशिक) की बात करते थे, वहीं विश्वरथसभी को आर्य बनाने का अधिकार मानते थे। असुर राज शंबर 99 किलोंका स्वामी बहुत बलशाली था, लेकिन आर्यों में घृणा का पात्र था। दस्यु केवल दास बन सकते थे। दस्यु महिलाएं केवल दासी हो सकती थी। यही अंतर था विश्वरथ और वशिष्ठ में। विश्वरथ तपस्या के पक्ष में थे,तो वशिष्ठ सत्संग के। आज की भाषा में विश्वरथराष्ट्रवादीथे, तो वशिष्ठ कर्मकांडी थे।विश्वरथ कृणवंतो विश्वमार्यमके असली उत्तराधिकारी थे। संयोग से इसी समय भूलवश शम्बर राजके सैनिकों ने विश्वरथऔर उनके मित्र ऋक्ष का अपहरण कर लिया। शम्बरको यह पता नहीं था जिसका अपहरण किया जा रहा है वह भरत वंश का राजकुमार है। असुरों की कोई लड़ाई भरतों से नहीं थी। अगस्त यह चाहते थे कि सभी आर्य एक क्षत्र के नीचे आ जाएँ। हालांकि यह अपहरण अनजाने में ही हुआ था। और दस्युराज शम्बर के यहाँ विश्वरथ के पहुंचने के समय भी ठीक से इनका परिचय यह नहीं हो पाया। बंदी जीवन ब्यतीत करते हुए घटनाक्रम में शम्बर राज का पुत्र बीमार हुआ। वहाँ का राजगुरु उपचार के लिए बुलाया गया, जो शैव (उग्रदेव) था, औरभगवान शंकर काउपासक था। सभी असुरशंकरउपासक थे, अर्थात शिवलिंगकी पूजा करते थे। विश्वरथ को यह समझने में देर नहीं लगी कि यह संघर्ष वरुणदेव और शिवलिंग पूजकों (शैव) के बीच है। असुर राजपुरोहित ने शम्बर राज से कहा कि मृत्यु के देवता भी उसे वापस नहीं कर सकते। सभी निराश हो गए। बच्चे की माँ ब्यथित हो रोने-कलपने लगी। विश्वरथ उसके दुःख को देख न सके। उसने दस्युराज से कहा यह तो मृत्यु को प्राप्त हो ही चुका है, एक अवसर मुझे दो, हो सकता है मैंप्रार्थना कर अपने इष्ट के द्वारा मैं इसे जीवित कर सकूँ। अघोरी को यह स्वीकार तो नहीं था, लेकिन राजा ने आज्ञा देदी। विश्वरथ ने वरुण देव का आवाहन किया और उनसे प्रार्थना करते हुए कहा- हे वरुण देव आखिर ये भी तो आपकी ही संतान हैं, उसे जीवित करो। उसने अपनी तपस्या को दांव पर लगा दिया। वरुण देव ने प्रसन्न हो उस बालक को जीवित कर दिया। दस्यु परिवार में विश्वरथ की धाक सी जम गई। दस्यु राजकुमारी उग्रा उससे प्रेम करने लगी। लेकिन उस अनार्य उग्रा को विश्वरथ कैसे स्वीकार कर सकता था?परंतु देवों को यह स्वीकार था कि सभी मानवों को आर्य बनाया जाय। देवाज्ञा से विश्वरथ ने उसे स्वीकार किया। वे पति-पत्नी के रूप में रहने लगे। लेकिनअगस्त कहाँ बैठने वाले थे? उन्होंने दस्युराज पर आक्रमण कर दिया। भरतों के राजकुमार का अपहरण होने की बात पर आर्य संगठित हो गए, और उन्होंने दस्युराज के 99 किलों को जीत लिया। उग्रा ने विश्वरथ को बलि होने से बचा लिया। समय पर अगस्त को सूचना दे अपने किले पर आक्रमण कराया। आर्यों की विजय हुई। उग्रा के पिता शम्बर ने उग्रा को कुल द्रोहिणी कह उसे पतित कहा। लेकिन उसने सभी अपमान पीकर विश्वरथ को जीवन दिया।अगस्त विश्वरथ पर दबाव बनाने लगे कि वह कुरूप अनार्य उग्राको छोड़ दे अथवा अपनी दासी बना ले। यह विश्वरथ को स्वीकार नहीं था। वे मानव-मानव में भेद नहीं मानते थे। उग्रा को आर्य में परिवर्तित करने के लिएविश्वरथ गायत्री मंत्र का जाप करते हैं, लेकिन लोग अभी भी उग्रा को स्वीकार करने से इंकार करते हैं। जल्द ही उग्रा एक पुत्र को जन्म देती है, लेकिन नाराज लोगों से पुत्र को बचाने के लिएउस समय की सबसे बड़ी महिला संत लोपामुद्रा बच्चे को एक सुरक्षित एवं गुप्त स्थान पर भेज देती हैं। लोग उग्रा को मार देते हैं। इससे लोपामुद्रा और विश्वरथ अत्यंत दुखी हो जाते हैं, परंतु उग्रा पुत्र बच जाता है। यह बात विश्वरथ को पता नहीं होती। धीरे-धीरे यह बच्चा बड़ा होता है और राजा अंबरीष के समारोह के कार्यक्रम में स्वयं को बलिदान करने के लिए उपस्थित होता है। इस समय तक विश्वामित्र को देव दर्शन और मंत्र दर्शन होने लगे थे। उनका मन राज-पाट में नहीं लगता। अब वे तत्सुओं को छोड़कर भरत ग्राम चले गए। वहाँ उनका राजतिलक भी हुआ। लेकिन उनका मन तो तपस्वी का था। उन्होंने तपस्यारत गायत्री मंत्रके दर्शन किए। उन्होंने कृण्वन्तो विश्वमार्यमका उद्घोष किया। उन्होने ब्रह्मांड को सिर्फ देखा ही नहीं उसके संघर्षण की आवाज भी गायत्री मंत्र- ?3म भूर्भुवः स्वः तत्स .. के रूप में सुनी। और इसके द्वारा सभी मनुष्यों की शुद्धि और सभी को आर्य बनाने की प्रक्रिया शुरू हो गई। सुधार आंदोलन के अंतर्गत इस मंत्र के अभ्यास को स्त्रियों और सभी जातियों में फैलाया। और कहा कि गायत्री मंत्र का उच्चारण व जाप सभी के लिए खुला है। इसलिए इसका व्यापक रूप से जाप कर मनुष्यों को श्रेष्ठ बनना चाहिए। वास्तव मेंआर्यावर्त के सबसे बड़े महारथी के रूप में उनकीवशिष्ठ से कोई प्रतियोगिता नहीं थी। वे अपने मार्ग के अकेले ऋषि थे। उनके ब्रह्मर्षि बनने की इच्छा होने की बात गलत और अफवाह है। वे ऋग्वेद के प्रथम मंत्र द्रष्टा होने के कारण ब्रह्मर्षि तो अपने आप ही थे। विश्वरथ के रूप में अध्ययन करते समय ही मंत्र द्रष्टा हो जाने से विश्वामित्र बन महर्षि हो गए थे। तत्सुओं, भरतों समस्त आर्यावर्त के पुरोहित हुए। लंबी तपस्या की यात्रा के चरम परऋषि विश्वामित्र की योग शक्ति भी चरम पर पहुंच गई थी। इस बिंदु पर पहुंचकर भगवान ब्रह्मा ने इंद्रदेव के नेतृत्व में राजा कौशिक को ब्रह्मर्षि की उपाधि दी और उन्हें एक नाम दिया-विश्वामित्र अर्थात जो सबका मित्र हो, जिसके हृदय में असीमित करुणा हो। उन्होंने प्रत्यक्ष देवासुर संग्राम को देखा था। वे सभी को समान देखते थे और शिव और वरुण दोनों को देव मानते थे। उन्होंने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया था।देवासुर संग्राम और कुछ नहीं शैव और वरुण के समर्थकों,अनुयायियों अथवा उस संस्कृतियों के मानने वालों के बीच का संघर्ष था। अपने कर्म से वे दोनों के पूज्य हो गए। वे राष्ट्र को मजबूत दिशा में ले जाना चाहते थे। वे सभी को आर्य बनने से वे बंचित नहीं होने देना चाहते थे। दोनों को एक करने का संकल्प आर्यावर्त के सर्वश्रेष्ठ राजवंश भगवान श्रीराम द्वारा रामेश्वरम में शिवलिंग की स्थापना करा सम्पूर्ण भारतवर्ष को आर्यावर्त में परिणित करना दोनों एक हैं, यह सिद्धकर नवीन पूजा पद्धति विकसित कर भारतवर्ष को, आर्यावर्त को राष्ट्र स्वरुप दिया। ऋषि अगस्त और ऋषि लोपामुद्रा भी अपने प्रिय शिष्य से सहमत थे। उन्होंने दक्षिण में विश्वामित्र के इस महान कार्य को पूरा किया। एक अन्य कथा के अनुसार राजा हरिश्चंद्र को वरुण देव के शाप से मुक्त करने हेतु नरमेध यज्ञ करने जमदग्नि और विश्वामित्र गए। वहाँ सम्पूर्ण आर्यावर्त के सभी राजा उपस्थित थे। वे विश्वामित्र का प्रताप देखने आए थे कि आज नर बलि होने से पूरे आर्यावर्त में विश्वामित्र की कैसी बदनामी होगी? वे आज क्या कहेंगे? लेकिन बलि के लिए लाए गए शुनःशेप के मुख से विश्वामित्र के प्रताप सेवेद मंत्र उच्चरित होने लगा और सभी ने देव दर्शन किया। इस पर जय-जय कर होने लगा। उस शुनःशेप को उन्होंने अपना पुत्र स्वीकार किया। अपने राज्य के उत्तराधिकारी के नाते अपने पुत्र को राजतिलक कराया और अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी शुनःशेपको अपनाया।

उ.प्र. चुनाव: योगी और अखिलेश के लिए बने प्रतिष्ठा का सवाल !

(श्याम यादव)

गौरतलब है कि लोकसभा में भाजपा से ज्यादा सीट समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के गठजोड़ में जीती ली थी और ऐसे में अघोषित तौर पर योगी के खिलाफ एक वातावरण निर्मित किया गया था जिसमें दोनों उपमुख्यमंत्रियों के कंधे से योगी को निशाने पर लिया गया था। उत्तर प्रदेश में इस माह में होने जा रहे 9 विधानसभाओ के उपचुनाव के परिणामों का असर ना तो उत्तर प्रदेश की राज्य की योगी आदित्यनाथ सरकार पर पड़ने वाला है और ना ही लोकसभा की नरेन्द्र मोदी सरकार पर।फिर भी इन उपचुनाव को भारतीय जनता पार्टी और समाजवादी पार्टी दोनों ने ही अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है। कारण भी है कि इन चुनावों में कांग्रेस मैदान में नहीं है और मुकाबला बीजेपी और सामाजवादी पार्टी में है। 13 नवंबर को जिन सीटों पर चुनाव होना हैं, वहां भाजपा ने 9 में से 8 सीटों पर अपने प्रत्याशियों को मैदान में उतारा है जबकि एक सीट एनडीए की सहयोगी राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी) को दी गयी है। इस मुकाबले में इस बार भाजपा के सामने कांग्रेस नहीं है और उसका मुकाबला समाजवादी पार्टी से ही हो रहा है द्य दरसल लोकसभा 2024 के मुकाबले में समाजवादी पार्टी, इण्डिया गठबंधन के साथ मिल कर चुनाव लड़ी थी और अकेले 37 सीट जीतने वाली समाजवादी पार्टी और उसके नेता अखिलेश यादव इन विधानसभा के उपचुनाव को 2027 के चुनाव का ट्रायल मान कर मैदान में उतारे हैं। चूँकि गठबंधन के प्रमुख घटक दल कांग्रेस ने इन चुनावों में समाजवादी पार्टी का समर्थन किया है तो इन सीटों की जीत हार का सेहरा भी सपा प्रमुख अखिलेश यादव के सिर ही बंधेंगा! ऐसे में सपा प्रमुख अखिलेश यादव नहीं चाहते होंगे कि भविष्य में भाजपा के खिलाफ बनने वाले इंडिया गठबंधन में उनकी स्थिति (हरियाणा में हुई हार के बाद) भी कांग्रेस जैसी हो जाय। इस कारण ये उपचुनाव न उनकी प्रतिष्ठा का सवाल बने हुए है। दूसरी ओर लोकसभा चुनाव में राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार के रहते गत लोकसभा से भी कम सीटों मिलने के दंश से उभरने के लिए ये उपचुनाव योगी आदित्यनाथ के लिए एक अवसर के समान है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस अवसर को (इन चुनावों का परिणाम) अपने पक्ष में कर, अपना रसूख सरकार और पार्टी में बनाये रखने में कोई कसर छोड़ेंगे ऐसा लगता नहीं है। जिन 9 सीटों पर उप चुनाव हो रहे हैं उनमें 4 पर सपा, 5 एनडीए ने जीती थीद्य योगी आदित्यनाथ अपनी पांचो सीट जीतने के साथ ही समाजवादी पार्टी की 4 सीटें भी भाजपा की झोली में लाने के प्रयास में साम दाम दंड भेद का उपयोग करने से नहीं हिचकिचाएंगे। यदि योगी आदित्यनाथ ऐसा करने में सफल हो जाते हैं तो वे अपने विरोध में उठने वाले हर उस स्वर को दबा देंगे जो लोकसभा के चुनाव में आशा अनुरूप सफलता न मिलने पर उठे थे।

इसके दूसरा असर योगी आदित्यनाथ की उस छवि को और अधिक निखार देगा, जो इन दिनों प्रखर हिंदूवादी, फायरब्रांड नेता की बन रही है और दबी जबान योगी को प्रधानमंत्री मोदी का विकल्प बताया जा रहा है। क्योंकि अब योगी आदित्यनाथ केवल उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ही नहीं रहे वे अब भाजपा के राष्ट्रीय प्रचारक होने के हिंदुत्व वादी राजनेता बन कर उभरे है जो यूपी के अलावा अन्य राज्यों में भी प्रचार कर रहे हैंद्य हाल ही में महाराष्ट्र चुनाव में उनका कटेंगे तो बटेंगे का बयान सियासी हलकों में चर्चा का विषय बना हुआ है।

गौरतलब है कि लोकसभा में भाजपा से ज्यादा सीट समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के गठजोड़ में जीती ली थी और ऐसे में अघोषित तौर पर योगी के खिलाफ एक वातावरण निर्मित किया गया था जिसमें दोनों उपमुख्यमंत्रियों के कंधे से योगी को निशाने पर लिया गया था। हालांकि पार्टी ने हार की समीक्षा ने कई कारण गिनाए थे और योगी सुरक्षित थे।

यही कारण है कि भाजपा इन 9 विधानसभा सीटो को अपने लिए प्रतिष्ठा का मुद्दा बनाये हुए है और सामाजवादी पार्टी की परपरागत सीट करहल पर अखिलेश यादव के परिवार के सदस्य कोही उनके खिलाफ मैदान में उतार कर यादव वोटों को विभाजित करने और 22 साल से सपा के कब्जे वाली सीट पर दांव खेला है।

कुल मिला कर इन उपचुनाव में कांग्रेस के न होने का कितना फायदा समाजवादी पार्टी या भाजपा को मिलता है यह परिणाम के बाद ही पता चलेगा लेकिन इतना तो तय है ये उप चुनाव दोनों ही दल और दोनों ही नेताओं योगी और अखिलेश के लिए प्रतिष्ठा का सवाल बने हुए है। (लेखक स्वतंत्र पत्रकार है)

बड़ी अपेक्षाओं वाली प्रियंका की क्षमताओं का फैसला चुनावी रण में होगा

भले ही वह कांग्रेस के लिए एक अनुभवी प्रचारक और संकटमोचक रही हैं। लेकिन इस लम्बे सफर में वह अब तक केवल चुनाव प्रचार करने वाली बहन और बेटी की भूमिका में ही थी। पहली बार अपने लिए वोट मांग रही प्रियंका वायनाड की सभाओं में पिता, मां और भाई के लिए दिए भाषणों की याद ताजा भी करती हैं। गांधी परिवार की सबसे ज्यादा जनसमर्थन रखने वाली सदस्य वो प्रियंका ने 52 साल की उम्र में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं, नेताओं और मीडिया के उस अगर मगर का जवाब दिया, जिसमें कहा जाता था कि वह ऐसा करेंगी। बतौर उम्मीदवार उनके पास चुनाव लड़ने का शून्य अनुभव हो, लेकिन इस बीच, प्रियंका गांधी पृष्ठभूमि में रहकर अपनी मां और भाई के चुनाव अभियान का प्रबंधन करती रहीं हैं। करीब छह साल पहले उनको संगठनात्मक जिम्मेदारी दी गई थी, जब 2019 में प्रियंका गांधी को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) का महासचिव नियुक्त किया गया और उन्हें पूर्वी उत्तर प्रदेश में पार्टी के अभियान का प्रभार दिया गया।

शाहिद नकवी

पिछले तीन दशकों से राजनीतिक मंचों पर नजर आने वाली प्रियंका गांधी आखिर काफी अगर मगर के बाद चुनावी राजनीति में भी उतर गई।क्या इंदिरा गांधी जैसी दिखने और गांधी परिवार की राजनीतिक कमान सम्हालने भर से वह चुनावी राजनीति में सफल हो जायेंगी?वह भी उस दौर में जो संघ की पाठशाला से निकले सबसे सफल प्रधानमंत्री मोदी का दौर कहा जाता है।जिस तरह उनके चुनाव लड़ने पर लम्बा अगर मगर लगा था,वैसा ही इस स्तर पर सफलता पर भी लगा है। बहरहाल ये दिलचस्प है कि अनुभवी प्रचारक प्रियंका एक नौसिखिया उम्मीदवार प्रियंका के लिए केरल की वायानाड सीट पर वोट मांग रही हैं। हांलांकि पहली बार (जैसा खुद खुलासा किया)उन्होंने 17 साल की उम्र में ही अपने पिता राजीव गांधी के लिए प्रचार करना शुरू किया था। भले ही वह कांग्रेस के लिए एक अनुभवी प्रचारक और संकटमोचक रही हैं। लेकिन इस लम्बे सफर में वह अब तक केवल चुनाव प्रचार करने वाली बहन और बेटी की भूमिका में ही थी। पहली बार अपने लिए वोट मांग रही प्रियंका वायनाड की सभाओं में पिता, मां और भाई के लिए दिए भाषणों की याद ताजा भी करती हैं। गांधी परिवार की सबसे ज्यादा जनसमर्थन रखने वाली सदस्य वो प्रियंका ने 52 साल की उम्र में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं, नेताओं और मीडिया के उस अगर मगर का जवाब दिया, जिसमें कहा जाता था कि वह ऐसा करेंगी। बतौर उम्मीदवार उनके पास चुनाव लड़ने का शून्य अनुभव हो, लेकिन इस बीच, प्रियंका गांधी पृष्ठभूमि में रहकर अपनी मां और भाई के चुनाव अभियान का प्रबंधन करती रहीं हैं। करीब छह साल पहले उनको संगठनात्मक जिम्मेदारी दी गई थी, जब 2019 में प्रियंका गांधी को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) का महासचिव नियुक्त किया गया और उन्हें पूर्वी उत्तर प्रदेश में पार्टी के अभियान का प्रभार दिया गया। उस समय कांग्रेस को ऐसा लगता था कि प्रियंका गांधी, इंदिरा गांधी की अक्स हैं और वो

एक करिश्माई लीडर साबित हो सकती हैं। कांग्रेस परिवार हमेशा उसे एक तुरुप का पत्ता मानती थी।साथ ही, चाहती थी कि जब भी प्रियंका गांधी राजनीति में आएंगी, तो कांग्रेस को इसका बहुत फायदा मिल सकता है और एक बड़ा बदलाव हो सकता है। उस समय प्रियंका ने साफ्ट हिंदुत्व की राह भी अपनाई थी। उन दिनों रूद्राक्ष की माला और माथे पर चंदन वाली प्रियंका हर जगह दिख जाती थी। हर विधानसभा क्षेत्र में दौरे में वह हर प्रसिद्ध मंदिर में जाने से नहीं चूकती थीं। अपने को बेहतर धार्मिक दिखाने के लिए उन्होंने गंगा यात्रा भी की थी। लेकिन ये सब कवायद बेकार गई और कयास केवल ख्याली साबित हुए और कांग्रेस यूपी के अंदर पूरी तरह से फेल साबित हुई। यूपी में कांग्रेस सिर्फ वापसी करने में नाकाम नहीं रही, बल्कि जिस स्थिति में थी उससे कहीं ज्यादा बदत्तर स्थिति में चली गई।कांग्रेसियों ने जैसा हौवा बनाया था कि कांग्रेस की स्थिति बदल जाएगी, ऐसा कुछ नहीं हुआ और कांग्रेस का जो एक तुरुप का पता माना जाता था, वो तुरुप का पत्ता भी नहीं चला। लेकिन कांग्रेस को या यूं कहें कि गांधी परिवार अभी भी प्रियंका को बड़ा पैकेज मानती है।वैसे तो भाई-बहन में अच्छी टियूनिंग है लेकिन किसी टकराव से बचने के लिए उनको दक्षिण भारत से लांच किया जा रहा है।इसकी एक बड़ी वजह ये भी है कि उत्तर भारत में बीजेपी मजबूत है तो वहीं पार्टी अभी भी दक्षिण में कर्नाटक को छोड़ दें तो हर राज्यों में सियासी जमीन ही तलाश रही है,ऐसे में कांग्रेस के लिए साउथ सेफ पैसेज है। प्रियंका की वहां मौजूदगी से कांग्रेस को केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु जैसे राज्यों में पार्टी को मजबूत करने में मदद मिलेगी। कांग्रेस की अगुवाई वाला गठबंधन केरल की सत्ता से दूर है। साल 2021 के केरल चुनाव में भी लेफ्ट गठबंधन ने लगातार दूसरी बार सरकार चलाने का जनादेश हासिल किया था। अब कांग्रेस को उम्मीद है कि प्रियंका गांधी के वायनाड में होने का सकारात्मक असर केरल चुनाव में देखने को मिलेगा और पार्टी को उनके यहां होने से चुनाव अभियान में कामयाबी मिल सकती है। इसके अलावा कांग्रेस ये कतई नहीं चाहती कि दक्षिण में ये संदेश न जाए कि उसे पार्टी बस स्टेपनी की तरह यूज करती है। प्रियंका को उतारने से दक्षिण के लोगों में यह संदेश जाएगा कि कांग्रेस पार्टी उनको पूरी अहमियत देती है। चुनावी राजनीति में प्रियंका भले ही नवअभ्यागत हों लेकिन वह एक मंजी हुई मंचीय नेता और कुशल वक्ता हैं। वह हर विषय पर सोच समझ कर बोलती हैं।वह अक्सर पीएम मोदी पर हमलावर रहती हैं लेकिन उनके बयानों से कभी कंट्रोवर्सी पैदा नहीं हुई। प्रियंका गांधी ने जिस तरह से बीजेपी के हमलों को बगैर किसी विवाद के काउंटर किया, उसे भी कांग्रेस के नजरिए से उम्मीद जगाने वाला माना जा रहा है। वायनाड सीट से अगर प्रियंका सफल होती हैं,जिसकी सम्भावना दिख रही है। तो कांग्रेस को केरल की राजनीति में भी बड़ी मदद मिलने की उम्मीद है। दरअसल केरल में कांग्रेस की अगुवाई वाला गठबंधन केरल की सत्ता से काफी दिनों से दूर है। साल 2021 के केरल चुनाव में भी लेफ्ट गठबंधन ने लगातार दूसरी बार सरकार चलाने का जनादेश हासिल किया था। राहुल के वायनाड सांसद बनने और 2019 में संसदीय चुनाव में बेहतर प्रदर्शन के बाद भी कांग्रेस को केरल की राजनीति में कुछ खास हासिल नहीं हुआ था। लेकिन प्रियंका के व्यक्तित्व में देखते हुए उनसे कांग्रेस को वहां सकारात्मक असर पड़ने की आस है। एक बड़ा सवाल ये भी उठ रहा है कि आखिर कांग्रेस ने प्रियंका को इतनी देर में क्यों चुनावी मैदान में उतारा? जबकि उनका पहले वाला क्रेज भी नहीं रहा। लेकिन कांग्रेस की राजनीति को समझने वाले विश्लेषकों का मानना है कि ये बिल्कुल सही समय है। कांग्रेस ने 2024 के लोकसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन किया और उसके सांसद,संसद में काफी मुखर नजर आ रही है।अगर प्रियंका भी लोकसभा पहुंचती हैं तो वह अपने भाई के साथ मिल कर मोदी सरकार को और अच्छी तरह से घेर सकती हैं। बेशक प्रियंका में उनकी दादी और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की झलक दिखती है। उनके समर्थक उनको इंदिरा गांधी जैसी मजबूत इच्छाशक्ति वाली महिला और भारतीय राजनीति की चुनौतियों का बखूबी सामना करने वाला मानते हैं। लेकिन सौ फीसदी ऐसा नहीं है कि प्रियंका के चुनावी राजनीति में आने से कांग्रेस को केवल फायदा ही होगा। कांग्रेस को इस फैसले के नुकसान भी उठाने पड़ सकते हैं। विरोधी दल खासकर भाजपा को प्रियंका के चुनाव लड़ने, संसद पहुंचने की स्थिति में परिवारवाद की पिच पर कांग्रेस को घेरने का आसान मौका मिल जाएगा। परिवारवाद जिस तरह से कांग्रेस में मजबूत हो रहा है, उस पर अब जोरदार अटैक करने का विरोधी पार्टियों को एक अवसर भी मिलेगा। आरोप है कि कांग्रेस परिवारवाद में सीमट रही। दरअसल कांग्रेस को संचालित कौन कर रहा है? कौन फैसले ले रहा है और गांधी परिवार की क्या भूमिका है। ये जग जाहिर है। ये भी तथ्य है कि जनता में प्रियंका का राहुल से बेहतर क्रेज है, अगर वह राहुल से आगे निकल जाती हैं तो गांधी परिवार के वफादार समूहों में मतभेद बढ़ सकते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि कुछ दिनों बाद मल्लिकार्जुन खड़गे के बदले प्रियंका को पार्टी की कमान सौंपने की मांग उठने लगे।

संक्षिप्त समाचार

परसदा में लोक सुनवाई 24 दिसंबर को

बिलासपुर। मेसर्स अरपा कोल बेनिफिक्रेशन एण्ड एनर्जी एलएलपी द्वारा मस्तूरी ब्लॉक के ग्राम भिलाई एवं रवालि में प्रस्तावित ग्रीनफिल्ड वेट टाइप कोल वॉशरी प्रोजेक्ट बेस्ड ऑन हैवी मीडिया साईक्लोन टेक्नोलॉजी 2.6 एमटीपीए को पर्यावरणीय स्वीकृति के लिए 24 दिसंबर 2024 को लोक सुनवाई का आयोजन किया गया है। ये लोक सुनवाई उक्त तिथि को मस्तूरी तहसील के ग्राम पंचायत परसदा (किसान) क्रिकेट मैदान में सवेरे 11 बजे से शुरू होगी।

लघु अवधि प्रशिक्षण कोर्स के लिए आवेदन 12 तक

बिलासपुर। शासकीय महिला आईटीआई कोनी द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए रोजगार एवं स्वरोजगारमुखी शुल्क आधारित 6 माह की लघु अवधि विभिन्न प्रशिक्षण कोर्स में प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित किये गये है। इच्छुक आवेदिका डोमेस्टीक डाटा एन्ट्री ऑपरेटर, जनरल ड्यूटी असिस्टेंट, ब्यूटी पार्लर एवं फैशन डिजाइनिंग का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए आवेदन कर सकती है। आवेदन करने की अंतिम तिथि 12 नवंबर तक है। प्रवेश हेतु विस्तृत जानकारी संस्था कार्यालय से कार्यालयीन समय में प्राप्त कर सकते है।

अग्निवीर भर्ती, शारीरिक दक्षता परीक्षा हेतु प्रवेश पत्र जारी

बिलासपुर। अग्निवीर भर्ती हेतु शारीरिक दक्षता परीक्षा का आयोजन 4 दिसंबर से 12 दिसंबर 2024 तक किया जा रहा है। यह परीक्षा ऐसे अभ्यर्थियों के लिए है जिन्होंने माह अप्रैल-मई 2024 में सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीईई) उत्तीर्ण कर लिया हो। दक्षता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए प्रवेश पत्र अभ्यर्थियों के ईमेल पर भेज दिया गया है। ऐसे अभ्यर्थी जिन्हें ईमेल पर प्रवेश पत्र प्राप्त नहीं हुआ है वे विभागीय वेबसाईट 222.द्ध्रश्वद्वठ्ठद्बठ्ठस्त्रद्बड्डठ्ठड्डह्म्द्व4.ठ्ठद्बष्.द्वठ्ठ से प्राप्त कर सकते हैं। परीक्षा में शामिल होने के लिए अभ्यर्थियों को प्रवेश पत्र, आधार से लिंक मोबाईल नंबर एवं विभाग द्वारा जारी सूचना के अनुसार आवश्यक दस्तावेज लाना अनिवार्य होगा।

राजस्व कर्मचारी गृह निर्माण सहकारी समिति का निर्वाचन कार्यक्रम जारी

बिलासपुर। छ.ग. राज्य सहकारी निर्वाचन आयोग के आदेशानुसार श्री एस. आर. भगत को राजस्व कर्मचारी गृह निर्माण सहकारी समिति मर्या. चांटीडीह को रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किया गया है। जारी निर्वाचन कार्यक्रम के अनुसार नियोजन पत्र की प्राप्ति 16 नवंबर, नियोजन पत्र की जांच 18 नवंबर एवं आमसभा, मतदान, मतगणना 30 नवंबर होगा। 2 दिसंबर को अध्यक्ष, उपाध्यक्ष की बैठक सूचना जारी की जाएगी। 7 दिसंबर को अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं प्रतिनिधियों का निर्वाचन सम्पन्न कराया जायेगा।

जिला अस्पताल में निः शुल्क कैंसर उपचार एवं परामर्श शिविर आज

बिलासपुर। जिला अस्पताल में नि: शुल्क कैंसर परीक्षण शिविर का आयोजन 7 नवंबर को किया जा रहा है। मुंबई के कैंसर विशेषज्ञ डॉ दिनेश पेन्डारकर द्वारा कैंसर मरीजों का परीक्षण एवं उपचार किया जाएगा। शिविर दोपहर 3 बजे से आयोजित है।

मेडिकल व इंजीनियरिंग प्रारंभिक परीक्षा की तैयार के लिए प्राक्चयन परीक्षा 10 को

कोरबा। युवा कैरियर निर्माण योजना अंतर्गत प्री मेडिकल एवं प्री इंजीनियरिंग प्रवेष परीक्षा की तैयारी हेतु अभ्यर्थियों के चयन के लिए जिला स्तर पर आवेदन आमंत्रित किए गए थे। पात्र अभ्यर्थियों हेतु प्राक्चयन परीक्षा 10 नवंबर 2024 को दोपहर 12 से 02 बजे तक प्रयास आवासीय विद्यालय सड्डू, उरकुरा मार्ग रायपुर में आयोजित की जाएगी। सहायक आयुक्त आदिवासी विकास से मिली जानकारी के अनुसार प्राप्त आवेदनों के परीक्षण उपरांत पात्र अभ्यर्थियों का प्रवेष पत्र विभागीय वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है। उक्त वेबसाइट के माध्यम से प्रवेष पत्र डाउनलोड किया जा सकता है। साथ ही अभ्यर्थियों को प्रवेष पत्र पर स्वयं का रोल नंबर, स्वयं सत्यापित फोटो तथा सम्पूर्ण विवरण भरकर परीक्षा केंद्र आना अनिवार्य है।

लड़की को शादी का झांसा देकर शारीरिक संबंध बनाने वाला आरोपी गिरफ्तार

कोरबा। प्रार्थिया ने मानिकपुर पुलिस चैकी चैकी उपस्थित होकर लिखित आवेदन पत्र प्रस्तुत करते हुए प्रथम सूचना दर्ज कराई कि आरोपी शुभम निर्मलकर के द्वारा घटना दिनांक 03.05.2024 के पूर्व से उसे पत्नि बनाने का झांसा देकर उसके साथ लगातार शारीरिक संबंध बनाया गया व विवाह करने के लिए बोलने पर शादी के लिये मना कर दिया गया है। प्रार्थिया की रिपोर्ट पर पुलिस सहायता केन्द्र मानिकपुर थाना कोतवाली में अपराध कमांक- 661є2024 धारा 376 भादवि पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। वरिष्ठ अधिकारीयो से प्राप्त निर्देश पर आरोपी की पता तलाश हेतु क्षेत्र में मुखबीर को सक्रिय किया गया। मुखबीर से प्राप्त सूचना अनुसार आरोपी को कृष्णानगर कोरबा से रेड कार्यवाही कर हिरासत में लिया जाकर विधिवत् कार्यवाही कि गई।

खाद्य सचिव ने की धान खरीदी की तैयारी की समीक्षा

सीसीटीवी कैमरे से होगी धान खरीदी केन्द्रों की निगरानी

■ इलेक्ट्रानिक कांटा-बाट का होगा तौल में इस्तेमाल

बिलासपुर/ खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के सचिव श्री अन्बलगन पी ने आज मंथन सभाकक्ष में कलेक्टरों की बैठक लेकर बिलासपुर संभाग में धान खरीदी की तैयारी की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि खरीदी केन्द्रों पर गड़बड़ी रोकने के लिए सीसीटीवी कैमरें से निगरानी रखी जायेगी। प्रत्येक केन्द्र पर दो-दो कैमरे लगाए जाएंगे। इसके साथ ही धान संग्रहण केन्द्रों और राईस मिल परिसरों में भी कैमरे इन्स्टाल किये जाएंगे। तौल में गड़बड़ी की आशंका को दूर रखने के लिए इलेक्ट्रानिक कांटा बाट का उपयोग किया जायेगा। शासन के निर्देशानुसार 14 नवम्बर से धान खरीदी की प्रक्रिया शुरू होगी। उन्होंने तमाम तैयारियां इसके पहले पूर्ण कर ओके रिपोर्ट देने के निर्देश दिए। संभागायुक्त श्री महादेव कावरे, एमडी मार्कफेड रमेश शर्मा सहित संभाग के सभी 8 जिलों के कलेक्टर एवं धान खरीदी कार्य से जुड़े विभागों के अधिकारी उपस्थित थे। खाद्य सचिव श्री अन्बलगन पी ने कहा कि धान खरीदी का कार्य राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता का काम है। इसके लिए शासन के दिशा-निर्देश एवं प्रक्रिया स्पष्ट रूप से परिभाषित किए गए हैं। इनका पालन करते हुए गंभीरता पूर्वक किसानों से उनकी मेहनत का उपज खरीदा जाये। उन्होंने कहा कि निर्धारित लिमिट के अंतर्गत वास्तविक किसानों का एक-एक दाना धान खरीदा जाए। उन्हें धान बेचने में किसी तरह की दिक्कत नहीं आए, इसका ध्यान रखें। किसानों की सुविधा के लिए छाया-पानी का इंतजाम भी स्थल पर किया जाए। गौरतलब है कि राज्य शासन ने प्रति एकड़ 21 क्विंटल की अधिकतम सीमा निर्धारित की है। बताया गया कि इस बार जारी टोकन तिथि के 7 दिन बाद धान बेचने की बारी आयेगी। खाद्य सचिव ने बारदाने की उपलब्धता एवं किसानों के भुगतान कार्य की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि बैंक से नकद निकासी में किसानों को किसी प्रकार की दिक्कत न आए। इसके लिए पयाप्त मात्रा में कैश रखा जाए। खाद्य सचिव ने कहा कि गड़बड़ी की आशंका वाले कम से काम पांच केन्द्रों पर सीधी निगरानी कलेक्टर स्वयं करें। पूर्व के अनुभव के आधार पर इनका चयन कर लिया जाए एवं रोज इसकी रिपोर्ट लिया जाये। उन्होंने कहा कि धान खरीदी अभियान का लाभ हमारे वास्तविक किसानों के लिए है, न कि कोचियों और दलालों के लिए। इसलिए दलाल किस्म के लोगों की पहचान पूर्व से ही कर लिया जाए और उनकी गतिविधि पर नजर रखी जाए। खरीदी प्रक्रिया पर जरा भी बाधा अथवा गड़बड़ी करने वाले पर तत्काल कार्रवाई किया जाये। पूरी प्रक्रिया पारदर्शिता पूर्वक होनी चाहिए। उन्होंने खरीदी प्रक्रिया का ट्रायल एवं रन करने के निर्देश भी दिए और आने वाली त्रुटियों को समय रहते सुधार लेने को कहा है ताकि खरीदी शुरू होने के बाद किसी तरह की बाधा न आए। उन्होंने मौसम की अनिश्चितता के मद्देनजर बेमौसम बारिश से फड़ के धान का बचाव के उपाय का इंतजाम रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कलेक्टरों और प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों की शंकाओं का समाधान भी किया। उन्होंने खरीदी केन्द्रों पर चेकलिस्ट के अनुरूप सभी तैयारियां पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं।

नागवाही पंचायत में 1.14 करोड़ रूपये की लागत से सभी 300 घरों में नल से पहुंच रहा है शुद्ध पेयजल

गौरेला पेण्ड्रा मरवाही - प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विकसित भारत संकल्पना के तहत ग्रामीण भारत के सभी घरों में 2024 तक व्यक्तिगत घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराने का लक्ष्य पूरा करने जल जीवन मिशन चलाया जा रहा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गौरेला पेण्ड्रा मरवाही जिले में हर घर नल से जल पहुंचाने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा कार्य किया जा रहा है। इसी कड़ी में मरवाही विकासखण्ड के ग्राम नागवाही में 1 करोड़ 14 लाख 77 हजार रूपये की लागत से सभी 300 घरों में नल से शुद्ध पेयजल प्रदाय प्रारंभ कर दिया गया है। योजना के संचालन एवं संधारण के लिए ग्राम पंचायत को हस्तातंरण कर दिया गया है। साथ ही ग्राम के सरपंच फूलकुंवर पोर्ते, पंचायत सचिव प्रदीप कुमार राय और ग्राम जल स्वच्छता समिति के सदस्यों तथा ग्रामवासियों को जल की उपयोगिता, जल प्रबंधन, जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन के बारे में बताया गया। जल जीवन मिशन भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है, जो प्रधानमंत्री द्वारा 15 अगस्त 2019 को शुरू किया गया था। इसका लक्ष्य वर्ष 2024 तक देश में प्रत्येक ग्रामीण परिवारों को नल से जल उपलब्ध कराना है।

कलेक्टर ने अवैध शराब निर्माण की शिकायत पर कार्यवाही करने निर्देश

कोरबा। कलेक्टर जनदर्शन में कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने जिले के दूरस्थ क्षेत्रो एवं ग्रामीण अंचलों से अपनी समस्याओं के निराकरण हेतु आम नागरिकों की परेशानियों को गंभीरता से सुना। उन्होंने प्राप्त सभी आवेदनों को शासन के नियमानुसार निराकरण के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने जोगियाडेरा गांव में बनाई जा रही अवैध महुआ षराब की षिकायत को गंभीरता से लेते हुए प्रकरण की जांच कर आवष्यक कार्यवाही करने के निर्देष आबकारी विभाग को दिए। भवानी मंदिर बस्ती के पास जोगियाडेरा के ग्रामवासियों ने जनदर्षन में षिकायत की कि गांव में पिछले वर्षों से महुआ षराब का अवैध रूप से निरंतर बनाकर बेची जा रही है। अवैध षराब को लेने के लिए बाहर के लोग भी सुबह-षाम आते हैं जिससे गांव में आए दिन लड़ाई-झगड़े और मारपीट होती रहती है। जब बस्ती वाले षराब बिक्री का विरोध करते हैं तो षराब बनाने वाले लोग ग्रामीणों से झगड़ा करते हैं और धमकी देते हैं। इस षिकायत को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर ने प्रकरण की जांच कर आवष्यक कार्यवाही करने के निर्देष सहायक आयुक्त आबकारी को दिए। इसी प्रकार जनपद पंचायत करतला के ग्राम तरदा निवासी तेरस राम पटेल ने स्वच्छ भारत मिषन के तहत षौचालय निर्माण कराया है। षौचालय निर्माण के 07 महीने बीत जाने के बाद भी उसे षौचालय की राषि प्राप्त नहीं होने पर षौचालय निर्माण की राषि दिलाने की मांग की। कलेक्टर ने आवेदन पर संज्ञान लेते हुए सीईओ जिला पंचायत को आवष्यक कार्यवाही हेतु निर्देषित किया। अम्बेडकर नगर बांकीमोंगरा निवासी कुमारी साहू ने षिकायत की कि उसके यहां पर बिजली कनेक्षन डेढ़ साल पहले लगा था, उनके द्वारा लगातार बिजली बिल का भुगतान किया जा रहा है। लेकिन पिछले 04-05 महीने से बिजली बिल घरेलू खपत से अत्याधिक आ रहा है। माह सितंबर का बिजली बिल 80,460 रूपए का दिया गया है, जिससे वह बहुत अधिक परेषान है। कलेक्टर ने कार्यपालन अभियंता सीएसपीडीसीएल को जांच कर कार्यवाही करने के निर्देष दिए। जनदर्शन में मुआवजा राशि दिलाने, रोजगार, नाली निर्माण, पेयजल की समस्या

छठ पूजा के दूसरे दिन छठ व्रत रतिया के द्वारा घाट बंधन कर स्थान जल सूर्य को अर्थ दिया

अंबिकापुर। छठ पूजा के दूसरे दिन आज बुधवार को बड़ी संख्या में छठव्रतियों ने दरिमा रोड स्थित घुनघुट्टा नदी के किनारों पर घाट बंधन कर अस्तांचल सूर्य को अर्ध्य दिया। घुनघुट्टा श्याम सेवा समिति के स्वयंसेवको ने आज दिन भर मेहनत कर तैयारियों को अंतिम रूप दिया। इस दौरान छठ घाट और तैयारियों का अवलोकन करने के लिए सरगुजा कलेक्टर और एस पी भी पूजा स्थल पर आये। श्याम घुनघुट्टा सेवा समिति की ओर से संरक्षक राकेश गुप्ता ने उन्हें तैयारियों की जानकारी दी, जिसपर उन्होंने संतुष्टि जताई एवं प्रशासनिक सहयोग का आश्वासन दिया। गुरुवार को अस्तांचल सूर्य को अर्ध्य देने के लिए घाट पर हजारों की तादाद में छठव्रतियों के आने की संभावना के मद्देनजर समिति ने 2100 घाटों का निर्माण किया है। गुरुवार को जबलपुर की सावन बैंड घुनघुट्टा घाट पर अपनी प्रस्तुति देगी। शुक्रवार को उदयमान सूर्य के अर्ध्य के दौरान गंगा आरती होगी। पूरे घाट क्षेत्र को आकर्षक झंडियों और विद्युत लड़ियों से सजाया गया है। पार्किंग के लिए अतिरिक्त व्यवस्था की गई है। समिति के संरक्षक राकेश गुप्ता ने कहा है कि समिति की ओर से घाट पर सुविधाओं को बढाने का पूरा प्रयास किया गया है। उन्होंने कहा है कि छठ पूजा के दौरान समिति और उसके सदस्य छठव्रतियों और श्रद्धालुओं की सेवा हेतु तत्पर एवं तैयार रहेंगे। इस दौरान समिति के अध्यक्ष- रामकुमार गुप्ता के साथ ही समिति के स्वयंसेवक संजीव कश्यप , नारद गुप्ता , उत्तम राजवाड़े , गीता प्रसाद , प्रकाश सोनी , निलेश कश्यप , नीरज गुप्ता , पंकज , तेजराज ,आशुमल, आदर्श, राकेश,शुभम,मुकेश,अभय,आशीष आदि पूजा की तैयारियों के लिए सक्रिय रहे।

यात्रियों को मिलेगी मानक व गुणवत्तायुक्त खान-पान की सुविधा

■ मंडल के उसलापुर, ब्रजराजनगर, अम्बिकापुर व उमरिया स्टेशन में फूड प्लाज़ा/फास्ट फूड यूनिट की सुविधा अतिशीघ्र

■ आईआरसीटीसी जल्द जारी करेगी ऑन-लाइन निविदा

बिलासपुर। रेलवे द्वारा यात्रियों के खानपान अनुभव को और भी बेहतर बनाने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाया जा रहा है। यात्रियों के लिए बेहतर खानपान सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु मंडल के चार प्रमुख स्टेशनों - उसलापुर, ब्रजराजनगर, अंबिकापुर और उमरिया पर फूड प्लाजा/फास्ट फूड यूनिट स्थापित किए जाएंगे। इन यूनिट्स के माध्यम से यात्रियों को स्टेशन पर ही गुणवत्तापूर्ण और स्वच्छ खानपान की सुविधाएं मिल सकेंगी। इसके अंतर्गत उसलापुर स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 1 में फूड प्लाज़ा एवं प्लेटफार्म संख्या 2/3 में फास्ट फूड यूनिट, ब्रजराजनगर स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 2/3 में फास्ट फूड यूनिट, अम्बिकापुर स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 1 में फास्ट फूड यूनिट एवं उमरिया स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 1 में फास्ट फूड यूनिट स्थापित किए जाएंगे । रेलवे प्रशासन द्वारा इसकी स्वीकृति प्रदान कर दी गई है आईआरसीटीसी द्वारा अतिशीघ्र ऑनलाइन निविदा जारी की जाएगी फूड प्लाजा/फास्ट फूड यूनिट्स में यात्रियों के लिए विविध प्रकार के खाद्य पदार्थ जैसे ताजे स्नैक्स, मुख्य भारतीय व्यंजन, पेय पदार्थ और हेल्दी फूड के विकल्प उपलब्ध होंगे। इसका उद्देश्य यात्रियों को यात्रा के दौरान स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक भोजन प्रदान करना है, जिससे उनकी यात्रा और भी आरामदायक और आनंददायक हो सके। साथ ही यात्रियों को निर्धारित मूल्यों पर खानपान का बेहतर विकल्प भी मिलेगा। रेलवे प्रशासन को पूर्ण विश्वास है कि यह सुविधा यात्रियों के सफर को और भी अधिक आरामदायक बनाएगी तथा उन्हें मानक व गुणवत्तायुक्त खान-पान का अनुभव करायेगी। मंडल रेल प्रशासन जल्द ही सभी प्रक्रियाओं को पूरा करते हुये इस सुविधा को उपलब्ध कराने हेतु प्रतिबद्ध है ।

श्री रामलला दर्शन योजना:बिलासपुर संभाग से 850 श्रद्धालु अयोध्या धाम के लिए हुए रवाना

■ श्रम और उद्योग मंत्री श्री लखनलाल देवांगन ने ट्रेन को दिखाई हरी झंडी

■ श्रद्धालुओं ने मुख्यमंत्री का जताया आभार, कहा अयोध्या धाम का दर्शन करना सौभाग्य की बात

बिलासपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में सरकार द्वारा शुरू की गई श्रीरामलला दर्शन योजना को लेकर श्रद्धालुओं में उत्साह का माहौल है। बिलासपुर संभाग के 850 श्रद्धालुओं को लेकर आज विशेष ट्रेन अयोध्या धाम के लिए रवाना हुई। इस विशेष ट्रेन को श्रम और उद्योग मंत्री श्री लखनलाल देवांगन, बेलतरा विधायक श्री सुशांत शुक्ला और जिला पंचायत अध्यक्ष श्री अरुण सिंह चौहान ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। अयोध्या धाम यात्रा के लिए जाने वाले श्रद्धालुओं का स्टेशन में भव्य स्वागत किया गया। गाजे बाजे और पारंपरिक नृत्य से उनका स्वागत हुआ। ये श्रद्धालु काशी विश्वनाथ का भी दर्शन करेंगे। बिलासपुर रेलवे स्टेशन पर भजन गाते हुए विशेष ट्रेन में सवार होकर यात्री रवाना हुए। सभी श्रद्धालुओं की रामलला के दर्शन की अभिलाषा पूरी होने जा रही है। ये श्रद्धालु मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के प्रति दिल से आभार व्यक्त कर रहे थे। श्रद्धालुओं का कहना था कि मुख्यमंत्री ने अपना वादा निभाया है और सरकार की श्री रामलला दर्शन योजना से अयोध्या जाने की उनकी इच्छा पूरी हो रही है। यह उनका सौभाग्य है। कोरबा जिले के श्री हरि प्रसाद मैत्री, श्री मनमोहन साहू, श्री बनवारी पटेल, बिलासपुर जिले की श्रीमती उषा वाजपेयी भी अयोध्या श्री रामलला दर्शन के लिए जा रहे है। उन्होंने मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा कि बुजुर्गो को तीर्थ यात्रा कराकर सरकार पुण्य का काम कर रही है। उम्र के इस पड़ाव में सभी को तीर्थ यात्रा की इच्छा रहती है लेकिन आर्थिक कठिनाईयों के चलते संभव नहीं हो पाता है। हम सरकार के आभारी है कि उन्होंने हमारी ये इच्छा पूरी की। अयोध्या धाम के लिए रवाना हुई इस विशेष ट्रेन में बिलासपुर जिले के 225 यात्री भी शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि श्री रामलला दर्शन योजना के तहत श्रद्धालुओं को पूरा पैकेज मिलेगा जिसमें छत्तीसगढ़ से अयोध्या जाने, वहां ठहरने की व्यवस्था, मंदिर दर्शन, नाश्ते और खाने की भी व्यवस्था रहेगी। इस ट्रेन में टूर एस्कॉर्ट, सुरक्षा कर्मी और चिकित्सकों का दल भी मौजूद रहेगा। इस अवसर पर नगर निगम कमिश्नर श्री अमित कुमार, सीईओ जिला पंचायत श्री आरपी चौहान, एसडीएम श्री पीयूष तिवारी, श्री रामदेव कुमावत सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

जड़ी-बूटियों से पाएं छरहरी काया

मोटापे की समस्या से जूझ रही महिलाओं के पास अब अपनी चर्बी घटाने और छरहरी काया पाने का एक और उपाय है। एक नए शोध से पता चला है कि जड़ी-बूटियों से निर्मित एक दवा लेने से महिलाएं अपनी भूख को पांचवें हिस्से तक घटा सकती हैं।

यह भी देखा गया है कि यह दवा मीठी चीजें पसंद करने वाली महिलाओं में इन चीजों के प्रति आकर्षण कम कर सकती है। लिवरपूल विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने तीन दक्षिण अमेरिकी पौधों से बनी दवा जोट्रिम पर प्रयोग किए थे।

नाश्ता कीजिए

वेबसाइट डेलीमेल डॉट को डॉट यूके के मुताबिक वैज्ञानिकों ने पाया कि जो महिलाएं सुबह नाश्ते के समय जोट्रिम लेती हैं, उन्हें दोपहर के भोजन के समय कम भूख लगती है और वह 17.6 प्रतिशत तक कम कैलोरी लेती हैं।

कैलोरी कम ग्रहण की

वैज्ञानिकों ने 58 लोगों पर यह अध्ययन किया था। उन्हें सुबह के समय जोट्रिम या उसी तरह की कोई अन्य दवा दी गई थी। जिन लोगों ने जोट्रिम दवा ली, उन्होंने औसतन 132 कैलोरी कम ग्रहण की। यह दवा एक व्यक्ति की प्रतिदिन 400 या 500 कैलोरी की जरूरत कम कर देती है।

भूख महसूस नहीं होती

जोट्रिम लेने से लोगों को भूख महसूस नहीं होती और वह तृप्त महसूस करते हैं और उन्हें मीठी चीजें भी कम पसंद आती हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक महिलाओं के बिस्कुट व चॉकलेट खाने में 27 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है। अध्ययनकर्ता डॉ. जेसन हाल्फोर्ड कहते हैं कि जोट्रिम का भूख पर गहरा असर होता है और इससे वजन कम करने में मदद मिलती है।

कमर-गर्दन

दर्द को न करें नजरअंदाज

बदलती लाइफ स्टाइल अब प्रॉब्लम का जरिया बनती जा रही है। इससे सबसे ज्यादा प्रभावित यूथ को ही इन दिनों हेल्थ संबंधी विभिन्न समस्याएं झेलनी पड़ रही है। ओबेसिटी के बाद इन दिनों यदि सबसे ज्यादा कोई समस्या देखने को मिल रही है तो वह है नैक और बैक पेन।

गलत पॉश्चर और गलत लाइफ स्टाइल के चलते यूथ सबसे ज्यादा इस प्रॉब्लम का शिकार हो रहे हैं। हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी इसे बीमारी का दर्जा दे दिया है। संगठन के अनुसार यह समस्या लगातार काफी बढ़ रही है, ऐसे में अब इसे बीमारी के रूप में ट्रीट किया जाना चाहिए।

पॉश्चर है प्रमुख वजह

अक्सर युवा कमर या गर्दन दर्द की ओर ध्यान नहीं देते, जिससे समस्या बढ़ जाती है। यूथ को यह समस्या गलत पॉश्चर की वजह से होती है। ऑफिस में घंटों गलत पॉश्चर में काम करने से दर्द होने लगता है। साथ ही जो लोग फील्ड वर्क करते हैं, उनका गाड़ी पर बैठने का तरीका गलत होता है, ऐसे में दचके लगने पर कई बार बैक बोन में प्रॉब्लम हो जाती है।

लगातार बढ़ रही है समस्या

निजी कम्पनी में कार्यरत युवराज बताते हैं कि मेरा फील्ड वर्क है, जिसके लिए मुझे अधिकतर समय बाइक से जाना पड़ता है, ऐसे में कई बार मुझे बैक पेन की शिकायत हो चुकी है। वहीं एक बैंक में काम करने वाली तनु बताती हैं कि दिन भर ऑफिस में कम्प्यूटर के आगे बैठने से कई बार कमर और गर्दन में दर्द होने लगता है। डॉक्टर्स का कहना है कि यूथ कई बार इन दर्द को इग्नोर कर देते हैं, जो बाद में असहनीय दर्द में बदल जाती है।

ये बरतें सावधानी

- बाइक पर बिल्कुल स्ट्रेट या ज्यादा झुककर न बैठें।
- ऑफिस की चेयर ऐसी हो, जिस पर आपका पॉश्चर सही हो।
- कम्प्यूटर सिर की सीध में होना चाहिए, ताकि गर्दन को झुकाना या मोड़ना न पड़े।
- काम के दौरान बीच-बीच में थोड़ा टहल आएं।
- जरा सा भी दर्द होने पर तुरंत डॉक्टर को दिखाएं।
- अपने हिसाब से कोई एक्सरसाइज या मालिश न करें, पहले फिजियोथैरेपिस्ट से सलाह लें।

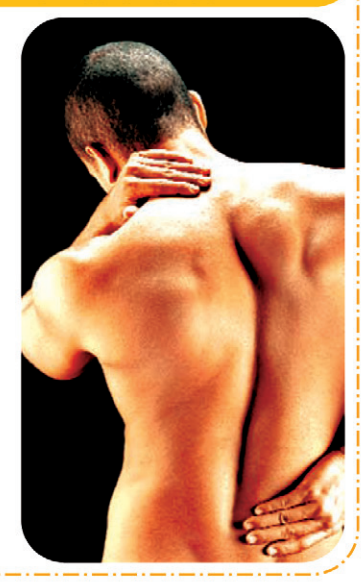

दफ्तर में कहीं बीमार न पड़ जाएं

तेज रफ्तार वाली आधुनिक कामकाज की शैली का असर युवा कर्मचारियों पर पड़ता है और वृद्ध सहयोगियों की तुलना में उनके बीमार होने का जोखिम दोगुना रहता है।

हाल के एक नये अध्ययन के अनुसार, ब्रिटेन में 3000 लोगों पर किये गए एक सर्वे में पाया गया कि 30 वर्ष से कम आयु के दो तिहाई लोगों ने पिछले साल सर्दी, अलर्जी के कारण एक सप्ताह में कम से कम एक दिन का अवकाश लिया, जबकि 55 वर्ष से अधिक आयु के कर्मचारियों ने उनकी तुलना में आधे ही अवकाश लिये।

डेली मेल के अनुसार, यह बात भी सामने आई कि 30 वर्ष से कम आयु के कर्मचारियों ने तनाव, थकान और कमजोरी महसूस करने के कारण अवकाश लिया, जबकि 55 वर्ष से अधिक आयु के कर्मचारियों ने कहा कि अवकाश लेने के लिए यह कोई कारण नहीं है।

बीमारी के लिए लेते हैं छुट्टी

सर्वे के अनुसार, 18-29 आयु वर्ग के पांच में से एक कर्मचारी ने बीमारी के लिए छुट्टी ली, क्योंकि वे काम पर जाने में असमर्थ थे और इस आयु वर्ग के कर्मचारियों ने कब्ज और कार सिकनेस के नाम पर भी छुट्टी ली। इसके मुकाबले 55 वर्ष से अधिक आयु के 85 प्रतिशत कर्मचारियों ने कहा कि बिस्तर पर पड़ने के अलावा अन्य किसी स्थिति में कार्यालय से अवकाश नहीं लेते। सर्वे में यह भी पाया कि 30 वर्ष से कम आयु के कर्मचारी नियमित तौर पर जंक फूड लेते हैं और 55 वर्ष से अधिक आयु वाले कर्मचारियों की तुलना में वे फल और सब्जियों का सेवन भी 50 प्रतिशत ही करते हैं।

दिल का हाल बताएगा मोबाइल फोन

दिल के मरीजों के लिए अच्छी खबर। एक ऐसा मोबाइल फोन तैयार किया गया है, जो आपके दिल का न सिर्फ ख्याल रखेगा, बल्कि उसकी हालत खराब होने पर डॉक्टर को भी सूचित करेगा।

समाचार पत्र डेली मेल में प्रकाशित खबर के मुताबिक द हैंडी साना नाम के इस टचस्क्रीन मोबाइल फोन की विशेषता यह है कि इसमें एक खास उपकरण लगा है, जो आपके दिल की धड़कन को नापने, उसे रिकार्ड करने और उसका इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम (ईसीजी) तैयार करने और उसे चिकित्सक के पास भेजने में सक्षम होगा।

- **हर्ट सूट :** यह मोबाइल फोन हर्ट सूट नाम के एक खास तरह के एप्लीकेशन से सुसज्जित है, जो दैनिक आधार पर आपके दिल का ख्याल रखते हुए आपके पैसे बचाएगा। फोन का उपयोग करने वाले दिल के मरीज फोन के एक किनारे पर अपनी दो अंगुलियों को आधे मिनट तक रखकर अपना ईसीजी रिकार्ड करा सकते हैं।
- **जानकारी भेज सकते हैं :** ईसीजी की रिकॉर्डिंग के बाद वे अपनी रिपोर्ट चिकित्सक के पास भेज सकते हैं। इसके साथ वे रक्तचाप, खून में शर्करा की मात्रा और कोलेस्ट्रॉल की मात्रा के बारे में चिकित्सक को जानकारी भेज सकते हैं। फोन को बनाने वाली कंपनी का दावा है कि आमतौर पर अस्पताल जाने पर मरीजों को ईसीजी कराना पड़ता है, लेकिन इस फोन के जरिए वे चिकित्सक को एक से अधिक जानकारी भेजकर अपने शरीर की सही स्थिति के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं।
- **फोन की शुरुआत :** ब्रिटेन में इस फोन की बिक्री शुरू हो चुकी है और इसकी कीमत 490 पाउंड (लगभग 36 हजार रुपए) रखी गई है। फोन का विपणन करने वाली कंपनी मेडिकल मार्केटिंग यूके लिमिटेड का कहना है कि इसे जल्द ही पूरी दुनिया में उतारा जाएगा।

सेहतमंद रहने के लिए खेलें फुटबॉल

क्या आप फुटबॉल खेलते हैं? अगर नहीं तो, अब किसी खेल मैदान से जुड़ने का वक्त आ गया है। हो सकता आप कोई गोल न कर पाएं, लेकिन इतना जरूर है कि आपकी सेहत सुधर जाएगी और जीवन शैली से जुड़ी बीमारियां छू मंतर हो जाएंगी।

एक व्यापक शोध में सात देशों के 50 से ज्यादा अनुसंधानकर्ताओं ने मिलकर फुटबॉल खेलने से पड़ने वाले शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक असर के पहलुओं का अध्ययन किया है। कोपेनहेगन विश्वविद्यालय के खेल विज्ञान के प्रोफेसर पीटर क्रुस्ट्रप और जेन्स बैंग्सबो ने तीन साल तक फुटबॉल पर अनुसंधान किया।

- **समूह को रखता है नियंत्रित :** अनुसंधानकर्ताओं ने अपने अध्ययन में नौ से 77 वर्ष की उम्र के बीच वाले कई पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को शामिल किया और इन्हें तीन समूहों में बांट दिया। पहले समूह में फुटबॉल खिलाड़ी, दूसरे में धावकों और तीसरे समूह को नियंत्रित रखा गया।
- **बेहतर सेहत :** परिणाम में फुटबॉल खेलने वालों की सेहत अन्य लोगों से बेहतर पाई गई। क्रुस्टप ने कहा कि फुटबॉल एक लोकप्रिय खेल है। इससे खिलाड़ियों के ऊपर मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और सामाजिक असर पड़ता है। उन्होंने कहा कि फुटबॉल खेलने से हृदय, पाचन क्रिया कारगर रहती है।

अग्रसेन स्टेडियम ग्राउंड में राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर भव्य राज्योत्सव कार्यक्रम का हुआ आयोजन

छत्तीसगढ़ प्रदेश पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की देन,हम सबको इसे मिलकर संवारना है : बैकुंठपुर विधायक भैयालाल राजवाड़े

हाथोर समाचार

सूरजपुर। राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर राज्योत्सव कार्यक्रम का आयोजन सूरजपुर अग्रसेन स्टेडियम ग्राउंड में आयोजित किया गया। गौरतलब है कि 01 नवंबर 2000 को 26 वां राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य का गठन मध्यप्रदेश राज्य को विभाजित करके किया गया था। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस 2024 के अवसर पर आयोजित भव्य कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सूरजपुर के जिलेवासियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और छत्तीसगढ़ का निवासी होने पर गर्व की अनुभूति की।

कार्यक्रम में बैकुंठपुर विधायक भैयालाल राजवाड़े मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। जहां उन्होंने उपस्थित जनों को छत्तीसगढ़ राज्य के स्थापना दिवस पर बधाई दी। उन्होंने कहा छत्तीसगढ़ प्रदेश पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की देन है और जो हमने बनाया है उसे हम सबको संवारना भी है। छत्तीसगढ़ बनने से क्षेत्र का अथाह विकास हुआ है। छत्तीसगढ़ खनिज, वन संपदा के साथ साथ सांस्कृतिक रूप से संपन्न राज्य है और इसके साथ ही वैभवशाली लोक परम्परा और जनजाति व संस्कृति से सजा छत्तीसगढ़ निरंतर विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है।

प्रेमनगर विधायक भूलन सिंह मराबी ने भी उपस्थित जनों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आज छत्तीसगढ़ 24 साल का हो गया है यह हमारे लिए बड़ी खुशी की बात है। उन्होंने वर्ष 2000 से लेकर अब तक के छत्तीसगढ़ में किए गए विकास कार्यों को उल्लेखित किया। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर हम सभी प्रदेश को आगे ले जाने और विकास का नया अध्याय लिखने का

संकल्प लें।

कार्यक्रम में शकुंतला सिंह पोर्ते भी विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल थी। इस अवसर पर उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि छत्तीसगढ़ निरंतर विकास कर रहा है और इसी प्रकार विकास करते हुए यह राज्य नित नए कीर्तिमान रचेगा। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण के लिए विशेष धन्यवाद दिया। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह को भी धन्यवाद देते हुए कहा कि आज छत्तीसगढ़ विकास की रह में अग्रसर है। पूर्व गृह मंत्री राम सेवक पैकरा ने कार्यक्रम में उपस्थित जनों को संबोधित किया।उन्होंने कहा आज छत्तीसगढ़ ने अपना 24 वर्ष का सफर तय किया है।छत्तीसगढ़ के निर्माण में पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का महत्वपूर्ण योगदान है। वही विधानसभा अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह का छत्तीसगढ़ के विकास में अद्वितीय योगदान है। जिला सूरजपुर भी विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह की देन है। जहां पहले दुरस्थ अंचल क्षेत्र चांदनी बिहारपुर के लिये एक लंबा सफर तय करना पड़ता था वो आज घंटों में तय हो रहा है। विकास निरंतर प्रक्रिया है और आप सभी की सहभागिता आवश्यक है। शासन लगातार ऐसे कदम उठा रहा है जिससे छत्तीसगढ़ विकास की नई ऊंचाईयों को छूएगा। इस अवसर पर पीएम आवास योजना अंतर्गत खुशियों की चाबी, सिकल सेल कार्ड , ऋण अनुदान की राशि, मत्स्य जाल वितरण, एन आर एल एम की ओर से महिला समूह को बैंक लिंकेज हेतु राशि प्रदान की गई है।

राज्योत्सव अंतर्गत स्थानीय, विद्यालय व महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं द्वारा प्रस्तुति, पारंपरिक नृत्य समूह द्वारा गणेश वंदना नृत्य की प्रस्तुति एवं शिव पार्वती नृत्य, मयूर नृत्य इत्यादि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

राज्योत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बैकुठपुर विधायक भैयालाल रजवाड़े, विधायक प्रेमनगर भूलन सिंह मरावी, विधायक प्रतापपुर शकुंतला पोर्ते, पूर्व गृहमंत्री रामसेवक पैकरा , कलेक्टर एस जयवर्धन द्वारा विभिन्न विभागों के अंतर्गत लगाए गए स्टालों का निरीक्षण किया गया। कार्यक्रम में जिला जनसंपर्क विभाग द्वारा स्टॉल लगाकर शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं पर आधारित प्रदर्शनी लगाई गई है। इसमें मुख्यमंत्री के नेतृत्व में विष्णु के सुशासन अंतर्गत छत्तीसगढ़ में समाज के हर वर्ग के लोगों के हित के लिए किए जा रहे योजनाओं को प्रदर्शित किया गया है। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग अंतर्गत पीएम आवास योजना, स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के क्रियान्वयन पर आधारित प्रदर्शनी और ग्रामीण आजीविका मिशन अंतर्गत बिहान समूह की महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई। पशुधन विकास विभाग , कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी विभाग, मत्स्य विभाग और उद्यानिकी विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस स्टॉल के माध्यम से मुर्गी पालन, पशुधन विकास, मत्स्य संपदा योजना , समन्वित कृषि प्रणाली सहित कृषि उन्नति के विभिन्न योजनाओं पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस दौरान कृषि की तकनीकों के संबंध में हितग्राहियों को जानकारी मुहैया कराई गई। इस अवसर पर आधुनिक कृषि यंत्रों , विद्युत पंपों , रासायनिक उर्वरकों ,उन्नत बीजों और धान के विविध किस्मों का प्रदर्शन भी किया गया।

समाज कल्याण और महिला बाल विकास विभाग द्वारा क्रियान्वित की जा रही योजनाओं पर आधारित स्टॉल लगाई गई थी जिसमें समाज कल्याण द्वारा दिव्यांगों के लिए प्रदान किए जाने वाले यंत्रों, ट्राइसाइकिल का प्रदर्शन किया गया। साथ ही महिला बाल विकास विभाग द्वारा राष्ट्रीय पोषण अभियान अंतर्गत पोषण प्रदर्शन केंद्र के रूप में पोषण युक्त खाद्य पदार्थों का एवं सुकन्या समृद्धि और महतारी वंदन योजना का प्रदर्शन किया गया। इस दौरान महतारी वंदन योजना अंतर्गत प्राप्त राशि का सुकन्या समृद्धि योजना में निवेश करने वाले हितग्राहियों को पासबुक मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किया गया। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों में चलाई जा रही योजनाओं पर आधारित स्टॉल का प्रदर्शन किया गया। इसमें कबाड़ से जुगाड़ अंतर्गत विद्यार्थियों द्वारा मनोरंजन के लिए कबाड़ से बनाए खेल के साधन, मक्के के ठूंठ / खोइया से बनाए गए प्लाई बोर्ड, कवक से बनाए गए जैविक ईट का प्रदर्शन किया गया। साथ ही स्टॉल में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को भी प्रदर्शित किया गया। स्वास्थ्य और आयुष विभाग द्वारा लगाई गए स्टॉल में एनसीडी स्क्रीनिंग, आयुष्मान पंजीयन और चिकित्सा सुविधा के साथ शासकीय योजनाओं का प्रदर्शन किया गया। स्टॉल में आयुष विभाग अंतर्गत विभिन्न औषधियों का भी प्रदर्शन किया गया। नगरीय प्रशासन और विकास विभाग द्वारा लगाई गए स्टॉल में धन्वंतरि योजना , कंपोस्ट निर्माण, पीएम आवास योजना, कबाड़ से जुगाड़ और स्वच्छ भारत मिशन पर आधारित प्रदर्शनी लगाई गई थी। इसके अलावा आदिवासी विकास विभाग, जलसंसाधन विभाग, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग, सीएस पीडीसीएल एवं क्रड़ा विभाग, पुलिस विभाग , एस ई सी एल बिश्रामपुर, जिला अग्रणी बैंक और लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओ पर आधारित स्टॉल लगाए गए थे। कार्यक्रम में नगर पालिका परिषद अध्यक्ष के के अग्रवाल, भीमसेन अग्रवाल, बाबूलाल अग्रवाल, महलवाला, शशिकान्त गर्ग, अजय अग्रवाल, जिला पंचायत सीईओ कमलेश नंदिनी साहू, अपर कलेक्टर नयनतारा सिंह तोमर संयुक्त कलेक्टर नरेंद्र पैकरा, डिप्टी कलेक्टर शिवानी जायसवाल एवं अन्य जनप्रतिनिधि व बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

मतदाता सूची का हुआ प्रारंभिक प्रकाशन 28 नवम्बर तक दे सकते हैं दावा-आपत्ति

राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक हुई संपन्न

मतदाताओं को अपना नाम मतदाता सूची में सम्मिलित किये जाने हेतु किया गया अपील

हाथोर समाचार

सूरजपुर। भारत निर्वाचन आयोग, नई-दिल्ली के निर्देशानुसार 29 अक्टूबर, 2024 (मंगलवार) को एकीकृत मतदाता सूची का प्रारंभिक प्रकाशन सूरजपुर जिले के तीनों विधानसभा क्षेत्र क्रमशः 04 प्रेमनगर, 05 भटगांव एवं 06 प्रतापपुर में किये जाने के उपरांत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी एस. जयवर्धन के निर्देशन में नरेन्द्र पैकरा, उप जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा सर्व मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों की बैठक ली गई। उप जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा बताया गया कि मतदाता सूची के प्रारंभिक प्रकाशन में दौरान जिले में कुल 296553 पुरुष मतदाता , 299313 महिला मतदाता एवं 05 तृतीय लिंग इस प्रकार कुल 595871 मतदाता दर्ज है। जिले में विधानसभा क्षेत्र 04 प्रेमनगर में 275 मतदान केंद्र , विधानसभा क्षेत्र 05 भटगांव में 309 मतदान केन्द्र सूरजपुर में तथा 06 मतदान केन्द्र सरगुजा जिले में एवं विधानसभा क्षेत्र 06 प्रतापपुर में 152 मतदान केन्द्र सूरजपुर जिले में तथा 144 मतदान केन्द्र बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के अंतर्गत सम्मिलित है। विधानसभा क्षेत्र 10 अम्बिकापुर के 01 मतदान केन्द्र सूरजपुर जिले में शामिल है। इस प्रकार सूरजपुर जिले में कुल 740 मतदान केन्द्र आते है। मतदाता सूची के प्रारंभिक प्रकाशन उपरांत 29 अक्टूबर से 28 नवम्बर 2024 तक जिले के सभी मतदान केंद्रों में दावा/आपत्ति प्राप्त किये जायेगें। दावा/आपत्ति प्राप्त करने की अवधि के दौरान 09 नवम्बर (शनिवार), 10 नवम्बर (रविवार), 16 नवंबर(शनिवार), 17 नवंबर (रविवार) को विशेष शिविर का आयोजन किया जायेगा। प्राप्त दावा/आपत्तियों का निराकरण दिनांक 24 दिसम्बर, 2024 तक किया जायेगा। प्राप्त दावा/आपत्ति के निराकरण के उपरांत दिनांक 06 जनवरी, 2025 को मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन किया जायेगा। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार दिनांक 01 अक्टूबर 2025 की स्थिति में 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में जोड़े जाने हेतु अग्रिम आवेदन पत्र प्राप्त किये जायेगें। उप जिला निर्वाचन अधिकारी के द्वारा छूटे हुये सभी मतदाताओं को शत-प्रतिशत अपना नाम मतदाता सूची में सम्मिलित किये जाने हेतु अपील किया गया है। राजनीतिक दलों की बैठक में भारतीय जनता पार्टी से बसंत कुशवाहा, इण्डियन नेशनल कांग्रेस से पुनीत गुप्ता, बहुजन समाज पार्टी से संदीप कुशवाहा, वीरेंद्र कुशवाहा एवं कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी) से सुरेन्द्र लाल नेटी एवं जिला निर्वाचन कार्यालय के कर्मचारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने समय सीमा की बैठक लेकर योजनाओं के क्रियान्वयन का लिया जायजा

हाथोर समाचार

सूरजपुर। समय सीमा की बैठक कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में रखी गई थी। जिसमें कलेक्टर एस जयवर्धन ने जिले में विभिन्न विभागों के अंतर्गत शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति की जानकारी लेते हुए आवश्यक निर्देश दिए। इस बैठक में जिला पंचायत सीईओ कमलेश नंदिनी साहू, अपर कलेक्टर नयनतारा सिंह तोमर, संयुक्त कलेक्टर नरेंद्र पैकरा, डिप्टी कलेक्टर शिवानी जायसवाल, सर्व एसडीएम सहित अन्य संबंधित जिला अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

बैठक में कलेक्टर जयवर्धन ने जिले धान उपार्जन की तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने बारदाने की उपलब्धता, भंडारण एवं धान खरीदी समितियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने पी डब्लू डी अंतर्गत जिले में किए जा रहे सड़क निर्माण एवं मरम्मत कार्यों की जानकारी ली गई । उन्होंने सभी निर्माण एवं मरम्मत कार्य को जल्द से जल्द गुणवत्ता पूर्ण रूप में करने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने जलजीवन मिशन की अंतर्गत जिले में पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए।

इसके अलावा उन्होंने सभी सीएमओ, एल डी एम सूरजपुर एवं संबंधित अधिकारियों को पीएम स्वनिधि और पीएम विश्वकर्मा योजना को बेहतर रूप में लागू करने के निर्देश दिए ताकि हितग्राहियों को योजना का लाभ मिल सके। इसके अलावा उन्होंने सड़कों को मवेशियों से मुक्त करने के लिए सभी आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

इसके अलावा उन्होंने जनकल्याण के लिए विभिन्न विभागों के अंतर्गत क्रियान्वित किए जा रहे योजनाओं के सम्बन्ध में जानकारी ली और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस अवसर पर उन्होंने छठ पर्व एवं राज्योत्सव के लिए किए जा रहे आवश्यक तैयारियों का जायजा लेते हुए संबंधित अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए।

कलेक्टर द्वारा रामानुजनगर विकासखंड का किया गया दौरा

सूरजपुर। कलेक्टर एस. जयवर्धन द्वारा रामानुजनगर विकासखंड का दौरा कर विकास कार्यों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रामानुजनगर, तहसील रामानुजनगर, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रेमनगर व तहसील प्रेमनगर एवं हेल्थ और वेलनेस सेंटर तारा का निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश दिए गए।

कलेक्टर जयवर्धन द्वारा सीएचसी रामानुजनगर के निरीक्षण के दौरान सभी व्यवस्था को बेहतर करने के निर्देश दिए। उन्होंने मरीजों को गुणवत्ता पूर्ण सेवा प्रदान करने के लिए स्वास्थ्य केन्द्र में सभी आवश्यक प्रबंध करने एवं साफ सफाई का संधारण करने हेतु निर्देशित किया। इसके अलावा उन्होंने तहसील कार्यालय रामानुजनगर और प्रेमनगर का भी निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश दिए।इस दौरान उन्होंने तहसील अंतर्गत राजस्व प्रकरणों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। सामुदायिक

स्वास्थ्य केंद्र प्रेमनगर, हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर तारा का निरीक्षण करते हुए उन्होंने मरीजों की संख्या, स्वास्थ्य कर्मियों की उपस्थिति आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की एवं क्षेत्र की जनता को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने के निर्देश दिए। इस दौरान एस डी एम रामानुजनगर सहित विभिन्न अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

अग्निवीर भर्ती रैली के लिए प्रवेश पत्र हुआ जारी

हाथोर समाचार

सूरजपुर। सेना भर्ती कार्यालय रायपुर द्वारा आगामी 04 से 12 दिसंबर तक रायगढ़ स्टेडियम, रायगढ़ में छत्तीसगढ़ के सभी 33 जिलों के पुरूष उम्मीदवारों के लिए अग्निवीर जनरल डयूटी, अग्निवीर ऑफिस असिस्टेंट,स्टोर कीपर व अग्निवीर टेउड्समैन (दसवीं व आठवीं) भर्ती रैली का आयोजन किया जाएगा। सेना द्वारा 22 अप्रैल 2024 से 03 मई 2024 तक ऑनलाइन सामान्य प्रवेष परीक्षा (सीईई) का आयोजन किया था। ऑनलाइन परीक्षा में उत्तीर्ण उम्मीदवार शारीरिक दक्षता सहित और अन्य भर्ती प्रक्रियाओं में भाग ले सकेंगे। रैली में भाग लेने वाले योग्य अभ्यर्थियों को प्रवेश पत्र वेबसाइट (www.joinindianarmy.nic.in) और उनके ई-मेल पर भेज दिया गया है। भर्ती में हिस्सा लेने के लिए एडमिट कार्ड व सभी दस्तावेज रैली संबंधी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सेना भर्ती कार्यालय, रायपुर शहीद वीर नारायण सिंह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के पास या टेलीफोन नं. 07771-2965212 पर संपर्क कर सकते है।

सभी अधिकारी राजस्व प्रकरणों के निराकरण में प्रगति लाएं : कलेक्टर एस जयवर्धन

कलेक्टर ने राजस्व अधिकारियों की ली समीक्षा बैठक

हाथोर समाचार

सूरजपुर। कलेक्टर एस. जयवर्धन द्वारा संयुक्त जिला कार्यालय के सभाकक्ष में राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक ली। बैठक में अपर कलेक्टर नयनतारा सिंह तोमर, संयुक्त कलेक्टर नरेंद्र पैकरा, डिप्टी कलेक्टर द्वय शिवानी जायसवाल और चांदनी कंवर, समस्त अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, तहसीलदार, नायब तहसीलदार सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। कलेक्टर ने राजस्व विभाग के कामकाजों की समीक्षा करते हुए राजस्व अधिकारी एसडीएम, तहसीलदार, नायब तहसीलदारों को निर्देशित करते हुए

आमजनों के राजस्व सहित अन्य समस्याओं एवं विभिन्न प्रकरणों का त्वरित निराकरण करना सुनिश्चित करने के लिए कहा। कलेक्टर ने बैठक में भूमि अधिग्रहण, सीमांकन, डायवर्सन, त्रुटि सुधार, बंदोबस्त, खसरा एवं नक्शा त्रुटि सुधार, अविवादित, विवादित नामांतरण, बंटवारा, भूमि आबंटन, जाति, निवास, आय प्रमाण पत्र, पटवारी की उपलब्धता और अभिलेख दुरुस्तीकरण, भू-राजस्व वसूली, भू-अर्जन प्रकरणों का मुआवजा भुगतान की स्थिति आदि की विस्तार से जानकारी ली। कलेक्टर जयवर्धन ने बैठक में लंबित सभी राजस्व प्रकरणों के निराकरण में प्रगति लाते हुए त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए। साथ ही सभी प्रकरणों का समय सीमा में निराकरण करने के लिए कहा।

शिक्षा विभाग के अधिकारी लॉन्ग टर्म योजना बनाकर करें कार्य : कलेक्टर एस.जयवर्धन

समय सीमा की बैठक हुई संपन्न

सूरजपुर। कलेक्टर एस जयवर्धन ने 29 अक्टूबर को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में समय सीमा की बैठक किया । जिसमें कलेक्टर एस. जयवर्धन ने जिले में संचालित सभी योजनाओं की विभागवार जानकारी प्राप्त की और आवश्यक निर्देश दिए। इस बैठक में डीएफओ पंकज कमल ,जिला पंचायत सीईओ कमलेश नंदिनी साहू, अपर कलेक्टर नयनतारा सिंह तोमर, संयुक्त कलेक्टर नरेंद्र पैकरा, डिप्टी कलेक्टर द्वय शिवानी जायसवाल एवं चांदनी कंवर, सर्व एसडीएम सहित अन्य संबंधित जिला अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

बैठक में कलेक्टर जयवर्धन ने जिले धान उपार्जन की तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने गिरदावरी, खसरा, रकबा की जानकारी लेते हुए किसानों को आने वाली किसी भी तरह की समस्याओं को सुलझाने एवम शासकीय योजना का लाभ प्रदान करने के निर्देश दिए। उन्होंने आगामी त्यौहारों को देखते हुए समय सीमा में धान उपार्जन की सभी तैयारियां पूरी करने के निर्देश दिए।उन्होंने पी डब्लू डी, पी एच ई और आर ई एस विभाग अंतर्गत जिले में किए जा निर्माण कार्यों की जानकारी ली गई एवं सभी निर्माण कार्य समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। जल जीवन मिशन की अंतर्गत जिले में पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश भी उनके द्वारा दिए गए। जिले में शिक्षा व्यवस्था की

स्थिति का जायजा लेते हुए कलेक्टर ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को लॉन्ग टर्म योजना बनाकर कार्य करने को कहा ताकि जिले में शिक्षा की स्थिति बेहतर की जा सके। उन्होंने सभी स्कूलों में प्राचार्यों एवं शिक्षकों को लक्ष्य बनाकर बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराने के साथ साथ बेहतर एवं खराब परफॉर्म करने वाले शिक्षकों के नियमित मॉनिटरिंग कर उचित कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

जिले में एकलव्य, नवोदय आवासीय विद्यालयों और समस्त छात्रावासों के सम्बन्ध में जानकारी लेते हुए उन्होंने समस्त छात्रावासों में शासकीय योजनाओं के तहत विद्यार्थियों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। इसके लिए उन्होंने नियमित मॉनिटरिंग करने के निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिए।

उन्होंने पीएम सूर्य घर योजना, जल शक्ति अभियान, स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत ओ डी एफ प्लस गांवों की स्थिति तथा आगामी पंचायत एवं नगरीय निकाय चुनावों को देखते हुए मतदाता सूची के प्रकाशन एवं सभी तैयारियों के संबंध में जानकारी प्राप्त की। इसके अलावा उन्होंने जिले के पेंशन प्रकरणों का जायजा लेते हुए उन्होंने लंबित पेंशन प्रकरणों निराकरण जल्द से जल्द करने के निर्देश दिए। इसके अलावा उन्होंने विभिन्न विभागों के अंतर्गत शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति की जानकारी लेते हुए आवश्यक निर्देश दिए।

इसके अलावा कलेक्टर जयवर्धन ने राज्योत्सव की तैयारियों को लेकर जिला प्रशासन द्वारा की जा रही तैयारियों की समीक्षा भी की एवं आवश्यक निर्देश दिए।

मतदाता सूची का हुआ प्रारंभिक प्रकाशन, 28 नवम्बर तक दे सकते हैं दावा-आपत्ति

राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक हुई संपन्न

मतदाताओं को अपना नाम मतदाता सूची में सम्मिलित किये जाने हेतु किया गया अपील

सूरजपुर। भारत निर्वाचन आयोग, नई-दिल्ली के निर्देशानुसार 29 अक्टूबर, 2024 (मंगलवार) को एकीकृत मतदाता सूची का प्रारंभिक प्रकाशन सूरजपुर जिले के तीनों विधानसभा क्षेत्र क्रमशः 04 प्रेमनगर, 05 भटगांव एवं 06 प्रतापपुर में किये जाने के उपरांत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री एस. जयवर्धन के निर्देशन में श्री नरेन्द्र पैकरा, उप जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा सर्व मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों की बैठक ली गई। उप जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा बताया गया कि मतदाता सूची के प्रारंभिक प्रकाशन में दौरान जिले में कुल 296553 पुरुष मतदाता , 299313 महिला मतदाता एवं 05 तृतीय लिंग इस प्रकार कुल 595871 मतदाता दर्ज है। जिले में विधानसभा क्षेत्र 04 प्रेमनगर में 275 मतदान केंद्र , विधानसभा क्षेत्र 05 भटगांव में 309 मतदान केन्द्र सूरजपुर में तथा 06 मतदान केन्द्र सरगुजा जिले में एवं विधानसभा क्षेत्र 06 प्रतापपुर में 152 मतदान केन्द्र सूरजपुर जिले में तथा 144 मतदान केन्द्र बलरामपुर-

रामानुजगंज जिले के अंतर्गत सम्मिलित है। विधानसभा क्षेत्र 10 अम्बिकापुर के 01 मतदान केन्द्र सूरजपुर जिले में शामिल है। इस प्रकार सूरजपुर जिले में कुल 740 मतदान केन्द्र आते है। मतदाता सूची के प्रारंभिक प्रकाशन उपरांत 29 अक्टूबर से 28 नवम्बर 2024 तक जिले के सभी मतदान केंद्रों में दावा/आपत्ति प्राप्त किये जायेगें। दावा/आपत्ति प्राप्त करने की अवधि के दौरान 09 नवम्बर (शनिवार), 10 नवम्बर (रविवार), 16 नवंबर(शनिवार), 17 नवंबर (रविवार) को विशेष शिविर का आयोजन किया जायेगा। प्राप्त दावा/आपत्तियों का निराकरण दिनांक 24 दिसम्बर, 2024 तक किया जायेगा। प्राप्त दावा/आपत्ति के निराकरण के उपरांत दिनांक 06 जनवरी, 2025 को मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन किया जायेगा। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार दिनांक 01 अक्टूबर 2025 की स्थिति में 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में जोड़े जाने हेतु अग्रिम आवेदन पत्र प्राप्त किये जायेगें। उप जिला निर्वाचन अधिकारी के द्वारा छूटे हुये सभी मतदाताओं को शत-प्रतिशत अपना नाम मतदाता सूची में सम्मिलित किये जाने हेतु अपील किया गया है।

राजनीतिक दलों की बैठक में भारतीय जनता पार्टी से बसंत कुशवाहा, इण्डियन नेशनल कांग्रेस से पुनीत गुप्ता, बहुजन समाज पार्टी से श्री संदीप कुशवाहा, वीरेंद्र कुशवाहा एवं कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी) से सुरेन्द्र लाल नेटी एवं जिला निर्वाचन कार्यालय के कर्मचारी उपस्थित रहे।

महिला बाल विकास विभाग व समाज कल्याण विभाग के

मंत्री मा. लक्ष्मी राजवाड़े जी

को जन्मदिन पर ढेरों बधाई एवं शुभकामनाएं...

महिला बाल विकास विभाग व समाज कल्याण विभाग के
मंत्री मा. लक्ष्मी राजवाड़े जी
छत्तीसगढ़ शासन

विनित :- भाजपा कार्यकर्ता भटगांव विधानसभा क्षेत्र जिला सूरजपुर (छ.ग.)

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक बिंटू सिंह द्वारा असमा पब्लिशर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, जय स्तंभ चौक रायपुर रायपुर (छ.ग.)-492001 से मुद्रित करवाकर व जंगल पारा वार्ड नंबर 01 , नगर पंचायत जरही , जिला सूरजपुर (छ.ग)-497235 से प्रकाशित। संपादक बिंटू सिंह मो. 9009935816 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार), समस्त विवादों का निपटारा न्यायलीन क्षेत्र सूरजपुर होगा।